॥ श्रीः ॥

नरेन्द्रमोहिनी ।

॥ पहिला हिस्सा ॥

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

और

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा
प्रकाशित ।

PRINTED BY
DURGA PRASAD KHATRI
AT THE LAHARI PRESS,
BENARES CITY.

सातवीं बार] 1922 [मूल्य ॥)

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर लहरी प्रेस,

बनारस सिटी।

बा. देवकीनन्दन खत्री

द्वारा प्रणीत।

- भूतनाथ
- गुप्तगोदना
- वीरेन्द्रवीर
- चन्द्रकान्ता
- कुसुम-कुमारी
- काजर की कोठड़ी
- चन्द्रकान्ता सन्तति

नरेन्द्रमोहनी
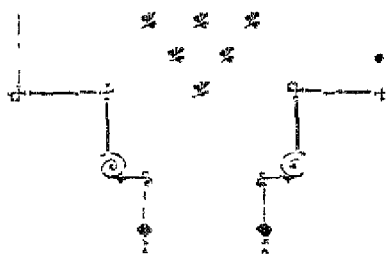
॥ श्रीः ॥

नरेन्द्रमोहनी।

दोनों भाग।
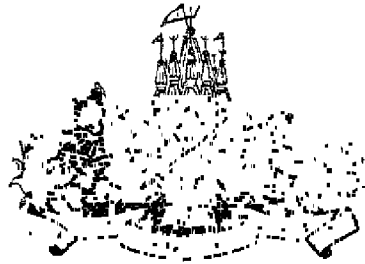
बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित।

दुर्गाप्रसाद खत्री

प्रोप्राइटर "लहरी प्रेस"

द्वारा प्रकाशित।

॥ श्रीः ॥

नरेन्द्रमोहनी ।

पहिला हिस्सा ।

पहिला बयान ।

"इस वक्त जङ्गल कैसा भयानक मालूम पड़ता है। चांदनी ने तो और ही रङ्ग जमाया है, पेड़ों में से जमीन पर पड़ती हुई दूर तक दिखाई देती है, बीच बो हुए पेड़ों की थुन्नियां निगाहों के सामने पड़ कर मेरे साथ क्या काम करती हैं, मैं ही जानता हूं ॥"

धीरे धीरे यह कहता हुआ बीस बाईस वर्ष के सिन का बड़े भारी और डरावने जङ्गल में इधर उधर घूम रह

गोरा रङ्ग, हर एक अङ्ग साफ और सुडौल, चेहरे से जवांमर्दी और बहादुरी बरस रही है, मगर साथ ही इसके फिक्र और उदासी भी उसके खूबसूरत चेहरे से मालूम पड़ती है॥

घूमते घूमते इस नौजवान बहादुर के कान में एक दर्दनाक रोने की आवाज आई जिसे सुनते ही वह चौंक उठा और इधर उधर ध्यान लगा कर देखने लगा मगर फिर वह आवाज़ न सुन पड़ी॥

यह दर्दनाक आवाज ऐसी न थी जिसे सुन कर कोई भी अपने दिल को सम्हाल सकता। नौजवान बहादुर तो एकदम परेशान हो गया, क्योंकि वह जितना दिलेर वो ताकतवर था उतना ही नेक वो रहमदिल भी था। आवाज कान में पड़ते ही मालूम हो गया कि यह किसी कमसिन औरत की आवाज़ है जिसपर जुल्म हो रहा है, इससे और भी न रहा गया और उसी आवाज की सीध पर पश्चिम की तरफ चल निकला॥

थोड़ी ही दूर जाने पर फिर वैसी ही दर्दनाक आवाज इस बहादुर के बाईं तरफ से आई जिसे सुन यह बाईं तरफ मुड़ा और थोड़ी ही देर में उस जगह जा पहुंचा जहां से वह पत्थर जैसे कलेजे को भी गला कर बहा देने वाली आवाज आ रही थी॥

वहां पहुंच कर इसकी तबियत और भी घबड़ाई, खौफ, ताज्जुब और गुस्से से अजब हालत हो गई, कलेजा धक धक करने लगा क्योंकि उस जगह पर ऐसा ही कौतुक देखा॥

जिस जगह पर यह जवान पहुंच कर खड़ा हुआ उसके सामने ही एक बड़ा पीपल का पेड़ था इस आधी रात के सन्नाटे में हवा के लगने से जिसकी पत्तियां खड़खड़ा रही थीं। उसी पेड़ की एक मोटी डाल के साथ एक लाश लटक रही थी जिसके पैर में रस्सी बँधी हुई थी और सिर नीचे की तरफ था। इसी को देखकर हमारे नौजवान बहादुर की वह दशा भई जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं॥

उस लाश को देखकर नौजवान ने म्यान से तलवार खैंच ली जो उसके कमर में लगी हुई थी और आगे बढ़ा, पास जाने से मालूम हुआ कि यह लाश औरत की है। साड़ी उसकी जमीन पर लटक रही थी और कई जगह से बदन नङ्गा हो रहा था, दोनों हाथ भी नीचे की तरफ लटक रहे थे॥

वह बहुत गौर से उस लाश को देखने लगा, इतने ही में हवा का एक तेज झटका आया जिसके सबब से पेड़ की तमाम छोटी छोटी डालियां हिल हिल कर झोंका खाने लगीं और वह डाली भी जो चन्द्रमा की रोशनी को उस लाश तक पहुंचने नहीं देती थी जोर से एक तरफ को हट गई और चन्द्रमा की रोशनी बहुत थोड़ी देर के लिये उस लाश के ऊपर आ पड़ी। साथ ही नौजवान के बिल्कुल रोंगटे खड़े हो गये क्योंकि उस औरत का चेहरा जो पेड़ के साथ बेहोश उलटी लटक रही थी उस चाँद से किसी तरह कम न था जिसकी रोशनी नैऋक्षण भर

के लिये उसके बदन पर पड़ कर उसकी हालत नौजवान को दिखला दी थी ॥

नौजवान को इस चांद की रोशनी में एक बात और ताज्जुब की दिखलाई पड़ी, वह उलटी लटकी हुई औरत बिल्कुल जड़ाऊ जेवरों से लदी हुई थी जिसे देखकर नौजवान के खयाल कई तरफ दौड़ने लगे ॥

जल्दी से उस लाश के पास जाकर देखने लगा कि इसमें कुछ दम है या नहीं। नाक पर हाथ रक्खा, सांस चल रही थी मालूम हुआ कि यह नाजुक औरत अभी तक जीती है। अब इसकी तबीयत कुछ खुश हुई और इस बात पर कमर बांधी कि जिस तरह हो सकेगा इसे उतार कर इसकी जान बचाऊंगा और उस शैतान के बच्चे को पूरी सजा दूंगा किसने इस औरत के साथ ऐसी बुराई की है ॥

यह सोच कर वह नौजवान बहादुर पेड़ पर चढ़ गया और बहुत होशियारी के साथ उस रस्से को खोला जिसमें वह औरत लटक रही थी। उसे धीरे से जमीन पर छोड़ आप भी नीचे उतर आया और उसकी टांग से रस्सी खोल सीधी कर पेड़ के साथ खड़ा कर दिया मगर हाथ से थामे रहा जिसमें उसके बदन का तमाम खून जो बहुत देर तक उलटे लटके रहने के सबब से सिर की तरफ उतर आया था लौट कर तमाम बदन में फैल जाय ॥

कुछ देर बाद उस औरत ने आंख खोली और बैठना चाहा ॥

बहादुर नौजवान ने धीरे से पेड़ के सहारे उसे बैठा दिया और पूछा कि अब मिज़ाज कैसा है? जिसके जवाब में वह कुछ न बोली, हां आंख उठा कर चन्द्रमा की तरफ देखा फिर सिर नीचे करके बहुत धीरे धीरे बोलने लगी:—

औरत०। आपने मेरी जान बचाई इसका बदला मैं किसी तरह पर नहीं दे सकती, अगर जन्म भर आप के जूठे बर्तन मांजूं तौ भी पूरा नहीं हो सकता ॥

नौजवान०। इसके कहने की कोई ज़रूरत नहीं, मैंने तुम्हारे साथ कोई नेकी नहीं की बल्कि मैंने अपनी भलाई की कि अपने को पाप का भागी होने से बचाया, मैंने अपनी जान लड़ा कर तुम्हारी जान नहीं बचाई, राह चलते चलते इस जगह आ पहुंचा और तुमको इस हालत में देख कर जो कुछ हो सका किया, मैं क्या कोई पत्थर के कलेजे वाला भी इस जगह आकर तुम्हारी सी औरत को ऐसी दशा में देख बिना बचाये कहीं जा सकता है? तिस पर जो ज़रा भी जानता होगा कि ईश्वर कोई चीज़ है उससे तो स्वप्न में भी कभी ऐसा न होगा इस लिये मैंने अपनी भलाई की कि अपने को राक्षस कहलाने से बचाया ॥

इतने में कई दफे हवा के झोंके आये और उस पीपल की डालियों ने हट हट कर चन्द्रमा की रोशनी को उन दोनों तक

पहुंचने दिया जिससे एक को दूसरे ने कुछ अच्छी तरह देखा और हर दफे उस नाज़ुक औरत ने मोठी मोठी बातें कहते उस नौजवान की सूरत को देख देख सिर नीचा कर लिया और ख़तम होने पर जवाब दिया ॥

औ०। मुझे इतनी बुद्धि नहीं है कि आपको इन बातों का जवाब दूं आखिर मैं तो औरत हूं हां मैं इतना कह सकती हूं कि आपने मेरे साथ जो कुछ किया उसे मैं ही जानती हूं कहने की सामर्थ्य नहीं और बहुत बातें करने का यह मौका भी नहीं क्योंकि अगर हम लोग यहां देर तक रहेंगे तो हम तीनों की जान बुरी तरह जायगी ॥

नौजवान०। (ताज्जुब से) यहां पर तो सिवाय हमारे और तुम्हारे तीसरा कोई भी नहीं है! तुमने यह कैसे कहा कि तीनों की जान जायगी ?

औरत०। (ऊँची सांस लेकर) हाय! मेरी बहिन भी इसी जगह है ॥

नौजवान०। (चौंक कर) हैं यहां पर तुम्हारी बहिन कहां ? जल्द बताओ जिसमें उसके बचाने की भी फिक्र की जाय ॥

औरत०। (हाथ से बतला कर) इसी जगह है ॥

नौज०। अगर जमीन में गड़ी है तो वह कब की मर गई होगी॥

औरत०। (चन्द्रमा की तरफ देख कर) नहीं नहीं, उसे गड़े बहुत देर नहीं भई है, मुझको छटकाने के बाद बदमाशों

ने उसे गाड़ा है, सिवाय इसके वह एक बड़े लम्बे चौड़े संदूक में रख कर गाड़ी गई है जरूर अभी तक जीती होगी॥

इतना सुनते ही नौजवान वहां से उठ खड़ा हुआ और उस औरत की बताई हुई जमीन को खंजर से खोदने लगा और वह नाज़ुक औरत अपने हाथों से मिट्टी हटाने लगी॥

सन्दूक बहुत नीचे नहीं गाड़ा गया था इस लिये उसके ऊपर का तख्ता बहुत जल्द निकल आया॥

सन्दूक में ताला नहीं था। नौजवान ने आसानी से उसका पल्ला उठा कर किनारे किया और दोनों ने मिलकर उस औरत को सन्दूक से बाहर निकाला जो उसके अन्दर बेहोश पड़ी हुई थी। इसके बदन में भी कुल जड़ाऊ गहने थे और साड़ी भी बेशकीमत थी मगर चेहरा साफ नजर नहीं आता था तौ भी कुछ कुछ चन्द्रमा की रोशनी उसकी खूबसूरती को छिपे रहने नहीं देती थी॥

सन्दूक के बाहर निकलने और ठण्ढी ठण्ढी हवा लगने पर भी दो घड़ी के बाद उसे होश आया तबतक नौजवान और नाज़ुक औरत अपने रूमाल और आंचल से उसके मुंह पर हवा करते रहे॥

होश आते ही उस औरत ने चौंक कर नौजवान और नाज़ुक औरत की तरफ देखा और धीरे से बोली, "बहिन! मेरी यह दशा कैसे हुई?" उसने जवाब दिया, "यह अब इन

सब बातों के पूछने का नहीं है। हम लोगों को चाहिये कि सिवाय भागने के और कुछ न करें बल्कि जब तक दूर न निकल जायँ बात तक न करें, हां जब ईश्वर हम लोगों को किसी हिफाजत की जगह पहुंचा देगा तब सब कुछ कह सुन लेंगे ॥

इतना सुनते ही वह उठ बैठी और इधर उधर देखकर फिर बोली:—

बहिन ! क्या हमलोग ऐसी जगह फंसे हैं कि सिवाय भागने के और कुछ नहीं कर सकते? अगर ऐसा हो तो मैं भागने को तैयार हूं मगर इतना तो बता दो कि यह नौजवान जो तुम्हारे पास बैठा है कौन है और मेरे बगल में यह गड्हा कैसा है जिसमें सन्दूक सा दिखाई पड़ता है ॥

औ०। मैं आप ही नहीं जानती कि यह बहादुर जिसने हमलोगों की जान बचाई है कौन है, हां इस गड्हे और सन्दूक का हाल जानती हूं मगर इस वक्त सिवाय भागने के मुझे और कुछ नहीं सूझता, अगर तुम्हारे में भागने की ताकत न हो तो उठाकर तुम्हारे यहां से निकाल ले जाने की फिक्र की जाय ॥

दूसरी औरत०। नहीं नहीं, अब मैं बखूबी तुम लोगों के साथ चल सकती हूं, लो चलो मैं तैयार हूं। यह कह उठ खड़ी हुई और चलना चाहा ॥

दूसरा बयान।

तीनों उस जगह से धीरे धीरे रवाना हुए। नौजवान औरत ने जो पेड़ से उतारी गई थी कहा, "मुझे आगे चलने दो क्योंकि मैं बहुत जल्द यहां से निकल चलने का रास्ता जानती हूं, तुम दोनों चुपचाप मेरे पीछे पीछे चले आओ।" नौजवान औरत आगे हुई और सीधे पश्चिम की तरफ चल निकली। ये दोनों भी चुपचाप उसके पीछे पीछे जाने लगे॥

घड़ी भर चलने के बाद ये तीनों एक नदी के किनारे पहुंचे जिसका पाट बहुत चौड़ा न था मगर इतना कम भी न था कि किसी का फेंका हुआ पत्थर या ढेला उस पार पहुंच सकता॥

छोटी छोटी दो खूबसूरत किश्तियां किनारे पर खूंटे से बंधी हुई दिखाई पड़ीं जिस पर हलके हलके डांड़े भी खेने के लिये पड़े थे। नाजुक औरत उस जगह खड़ी होगई और अपने पीछे आने वाले दोनों को कहा कि जल्दी इसमें से किसी एक किश्ती पर सवार हो लो देर मत करो। यह सुन नौजवान ने कहा, "पहिले तुम दोनों सवार हो लो फिर मैं भी सवार हो जाऊंगा।" यह कह अपने हाथ का सहारा दे दोनों औरतों को किश्ती पर सवार कराया मगर जब खुद चढ़ने लगा तब उस नाजुक औरत ने रोका और कहा, "पहिले उस दूसरी किश्ती को किनारे से

खोल कर इस किश्ती के साथ बांध लो तब तुम सवार हो क्यों-कि उस किश्ती को भी मैं अपने साथ लेती चलूंगी ॥”

नौजवान० । दूसरी किश्ती को इसके साथ बांध कर ले चलना बेफायदे है और हमारी किश्ती उसके साथ बँधने से उतनी तेज न चल सकेगी जितनी अकेली ॥

औरत० । नहीं, जो मैं कहती हूं उसे करो, इसका सबब तुम्हें मालूम नहीं, बस अब बहुत देर करने में हर्ज होगा जल्दी उस किश्ती को भी इसके साथ बांधकर तुम सवार हो जाओ ॥

नौजवान ने यह सोचकर कि शायद इसमें कोई भेद हो उस दूसरी किश्ती को किनारे से खोल अपनी किश्ती के साथ बांधा और खुद सवार होकर किश्ती किनारे से हटा दिया और डांड़ लेकर खेने लगा ॥

औरत० । अब मेरा जी ठिकाने हुआ और जान बचने की उम्मेद हुई, यह सब आप ही की बदौलत है, अब आप इस तरफ आकर बैठिये मैं किश्ती खेकर ले चलती हूं ॥

नौजवान० । वाह ! मैं बैठूं और तुम किश्ती खेओ ! यह भी खूब कही, बस तुम दोनों चुपचाप बैठी रहो देखो मैं कितनी तेज इसे ले चलता हूं । तुम लोगों के तो अभी तक होश भी ठिकाने नहीं हुए होंगे । हां, यह तो बताओ कि अभी तक तो मुझको 'तुम तुम' कहकर पुकारती रहीं मगर जब से किश्ती पर सवार हुई हो कई दफे मुझे आप कहके तुमने पुकारा इसका

क्या सबब है ? तुम्हारी बातचीत से साफ मालूम होता है कि तुम पढ़ी लिखी हो अगर ऐसा न होता तो मैं इस बात का खयाल न करता और कभी तुमसे यह सवाल न करता ॥

उन दोनों औरतों ने इसका जवाब कुछ न दिया बल्कि मुस्कुरा कर सिर नीचा कर लिया ॥

नौजवान० । भला किसी तरह तुम दोनों के चेहरे पर हँसी तो दिखाई दी ॥

औरत० । अब हमलोग कुछ दूर निकल आये हैं अगर यह किश्ती जो हमारी किश्ती के साथ बँधी हुई चली आती है डुबा दी जाय तो हमलोग पूरे तौर पर निश्चिन्त हो जायँ ॥

नौजवान०। इस दूसरी किश्ती को अपने साथ लाने का सबब अब मैं बखूबी समझ गया, जहां तक हो इसे जल्द डुबा ही देना चाहिये सो भी इस तर्कीब से कि हमारी किश्ती को कोई नुक्सान न पहुंचे ॥

यह कह नौजवान ने डांड़ खेना बन्द कर दिया और अपनी किश्ती से उतर कर उस किश्ती पर गया जो पीछे बँधी हुई थी तथा कमर से खञ्जर निकाल एक हाथ जोर से उसकी पेंदी में मारा जिससे सूराख होकर उसमें पानी आने लगा, बाद इसके नौजवान ने अपनी किश्ती में आकर उसे खोल दिया और धीरे से खेकर अपनी किश्ती कुछ आगे बढ़ा ले गया ॥

देखते देखते उस किश्ती में जल भर आया और वह डूब

गई। अब नौजवान ने अपनी किश्ती खूब तेजी से आगे बढ़ाई॥

नदी का जल बिलकुल ठहरा हुआ मालूम होता था जैसे किसी ने फर्श बिछाया हो। चन्द्रमा भी अपनी पूर्ण किरणों से साफ आस्मान में उगा हुआ था। ये तीनों किश्ती पर बैठे चले जाते थे। तीनों नौजवान, तीनों खूबसूरत, तीनों नाजुकबदन, आपुस में देख देख कर खुश होते, मुस्कुराते और डांड़ चलाये चले जाते थे॥

नाजुक औरत ने हंस कर हमारे नौजवान बहादुर से कहा, "बस अब हमलोगों को किसी का डर और खौफ नहीं है, किश्ती को धीरे धीरे बहने दीजिये और मेरे पास आकर बैठिये॥"

नौजवान भी यही चाहता था कि इन दोनों के पास बैठ कर बातचीत से मालूम करे कि ये दोनों कौन हैं, क्योंकि अब बात करने का मौका बहुत अच्छा है। अस्तु डांड़ा खेना बन्द कर दिया बल्कि उसे उठाकर किश्ती में डाल दिया और खुशी खुशी उस जगह आकर बैठा जहां वे दोनों औरतें बैठी मुस्कुरा रही थीं॥

तीसरा बयान।

किश्ती धीरे धीरे बहने लगी। नैाजवान ने दोनों औरतों की तरफ देख कर कहा कि अब हम बिल्कुल बेखौफ हैं, मुझे तो किसी का डर न था मगर तुम लोगों के सबब से डरना पड़ा, अब तुम दोनों का हाल जानें बिना जी बहुत ही बेचैन हो रहा है और इससे अच्छा समय भी बातचीत करने का न मिलेगा॥

नाजुक औरत०। पहिले आप कहिये कि आपका क्या नाम है, कहां के रहने वाले हैं और उस जङ्गल में (कांप कर) ओफ याद करते कलेजा दहलता है—आप कैसे पहुंचे?

नौजवान०। पहिले तुमको अपना हाल कहना चाहिये क्योंकि तुम्हारे पूछने के पहिले ही मैं यह सवाल कर चुका हूं, सिवाय इसके मेरा कोई विचित्र हाल नहीं है, हां तुम दोनों की हालत जब याद करता हूं बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हाय! उसका कैसा कलेजा था जिसने तुम दोनों के साथ ऐसा सलूक किया॥

दूसरी औरत०। (जो जमीन से निकाली गई थी) हां बहिन पहिले तुमही अपना हाल कहो क्योंकि मेरी तबीयत यह सुने बिना बहुत ही घबड़ा रही है कि मेरी यह दशा किसने की थी॥

नाज़ुक औरत० । अच्छा पहिले मैं ही अपनी रामकहानी कहती हूं (नौजवान को तरफ देख कर) आप और कुछ हाल न कहिये तो नाम तो पहिले बता दीजिये जिसमें बात करने या पुकारने का सुबीता हो ॥

नौजवान० । इसका कोई मुजायका नहीं, सुनो मेरा नाम "नरेन्द्र" है । बस अब जब तक तुम दोनों का हाल न मालूम होगा मैं और कुछ न कहूंगा ॥

नाज़ुक औरत०। हां हां, अब आप दिल लगा कर मेरा हाल सुनिये, मैं कहती हूं ॥

इन लोगों ने किश्ती खेना बन्द कर दिया था और एक दूसरे की बात में इतना लीन हो रहा था कि किश्ती की चाल और बहाव का कुछ ख़याल न रहा और वह बहती हुई कुछ किनारे की तरफ हो गई ॥

अभी नाज़ुक औरत ने अपना किस्सा कहना शुरू नहीं किया था कि इन लोगों की किश्ती एक घने पीपल के पेड़ के नीचे पहुंची जो नदी के किनारे ही पर था ॥

इन लोगों की किश्ती उस पेड़ के नीचे पहुंची ही थी कि ऊपर से आवाज आई, "भला नरेन्द्र ! लेजा भगा के, अब यारों की फिक्र क्यों होगी मगर हम भी तुम्हारे ओस्ताद ही निकले रास्ता ही आकर बन्द कर दिया । भला अब आगे जा तो सही देखें कितना हौसला रखता है ॥"

इस आवाज के सुनते ही वे दोनों औरतें डरीं मगर हमारा बहादुर नौजवान एकदम हँस पड़ा जिससे दोनों औरतों को बड़ा ताज्जुब हुआ, क्योंकि इस आवाज को सुनकर वे घबड़ा गई थीं, उनको पूरा विश्वास हो गया था कि कोई हमलोगों का दुश्मन आ पहुँचा, डर के मारे बदन कांपने लगा था मगर हमारे बहादुर नौजवान नरेन्द्र को हँसते देख इन दोनों की और ही हालत होगई और उनके मुह की तरफ देखने लगीं। नरेन्द्र ने हँसकर कहा :—

"घबड़ाओ मत देखो मैं इसे अपनी किश्ती पर बुलाता हूं।" इतना कह उस पेड़ की तरफ देखा और बोले :—

"अबे भूतने ! अब पेड़ से उतरेगा भी कि ऊपर ही बैठा रहेगा ? आ किनारे पर ॥"

आवाज०। नहीं अब मैं नीचे नहीं आने का जाओ अपनी किश्ती ले जाओ, हि हि हि हि, किश्ती ले जाना क्या हँसी ठट्ठा है ! छूः, ऐसा मन्त्र पढ़ दिया कि सिवाय किनारे लगाने के इस किश्ती को तुम आगे ले जा ही नहीं सकते। बचाजी तुम तो खूब जान बचा के भागे थे पर अब कहां जाओगे ? तीन दिन का भूखा प्यासा मैं आज तुम तीनों को खाये बिना थोड़े ही छोड़ूंगा ॥

नरेन्द्र०। (किश्ती किनारे लगा कर) अबे उतरेगा कि दूं मिर्चों की धूनी ॥

आवाज० । अगर मिर्च के खेत ही में आग लगा देंगे तो क्या होगा ?

नरेन्द्र० । अच्छा मेरे भाई अब तो उतरो ॥

आवाज० । जी हां मैं ऐसा वैसा भूत नहीं हूं कि जल्दी उतरूं ॥

नरेन्द्र० । उतरता है कि नहीं ॥

आवाज० । जाता है कि नहीं ॥

नरेन्द्र० । राम राम, इसने तो दिक कर डाला, भला यह तो बताओ तुम उतरते क्यों नहीं ?

आवाज० । भाईजान तुम रञ्ज क्यों हो गये ? जानते हो है कि मैं कितना फूंक फूंक के पैर रखता हूं ॥

नरेन्द्र० । तो इस वक्त तुम्हें किस बात का डर है ?

आवाज० । यही कि कहीं नजर न लग जाय ॥

नरेन्द्र० । किसकी नजर ?

आवाज० । ये दोनों औरतें मेरी जवानी और पहलवानी पर नजर लगा देंगी ॥

इतना सुनते ही नरेन्द्र एकदम खिलखिला कर हंस पड़ा बल्कि वे दोनों औरतें भी जो अभी तक डर के मारे कांप रही थीं हंस पड़ीं, फिर सोचने लगीं ॥

"यह कौन है ! क्या सचमुच कोई भूत है ! अगर यह भूत है तो नरेन्द्र भी कोई पिशाच ही होंगे । नहीं नहीं ऐसा नह

सोचना चाहिये। नरेन्द्र बहादुर और लासानी आदमी हैं, अगर भूत प्रेत वा पिशाच होते तो इनकी परछाहीं जो चन्द्रमा की रोशनी से इस किश्ती में पड़ रही है न पड़ती और इनके आंखों की पलक नीचे न गिरती ! यह सब ठीक है मगर यह कौन है जो पेड़ पर चढ़ा हुआ बोल रहा है और नीचे नहीं उतरता !!"

नरेन्द्र ने बहुत कुछ कहा मगर वह शैतान पेड़ के नीचे न उतरा। आखिर हँसते हुए नरेन्द्र किश्ती से नीचे उतरे और पेड़ के पास आकर बोले, 'उतरता है या काट डालूं पेड़ को ?" यह कह एक हाथ तलवार का उस पेड़ पर लगाया साथ ही इसके पेड़ के ऊपर वाला शैतान चिल्लाया, "हां हां हां हां, ऐसा काम कभी मत करना, पेड़ मत काटना नहीं तो मैं गिर कर मर जाऊंगा। लो मैं आप ही उतरता हूं तुम फ़िक्र मत करो ॥"

नरेन्द्र० । अच्छा फिर उतर जल्दी ॥

आवाज० । उतरता हूं घबड़ाते क्यों हो ? क्या कूद कर जान दे दूं ?

आखिर धीरे धीरे वह शैतान नीचे उतरा और नरेन्द्र ने उसका हाथ पकड़ के किश्ती पर ला बैठाया और किश्ती को किनारे से हटा गहरे जल में लेजा कर बहाव पर छोड़ दिया ॥

नरेन्द्र ने जब से उस शैतान को किश्ती में लाकर बैठाया तब से उसकी शक्ल देख देख दोनों औरतों की अजब हालत थी, मारे हँसी के लोटी जाती थीं क्योंकि पेड़ पर से वह जिस दिल-

बरी और डरावनी आवाज से बोलता था नीचे उतरने पर उसकी वैसी सूरत न पाई बल्कि उसकी सूरत ऐसी थी कि जो कोई देखे जरूर हँसी आ जाय ॥

पचीस तीस वर्ष का सिन, नाटा कद, छोटे छोटे हाथ पैर, सीतला मुंह दाग, एक आंख गायब, लाल रङ्ग की धोती, लाल ही रङ्ग का कुरता और टोपी जिसमें गोटा टंका हुआ था, कांधे पर एक अँगोछा, बगल में एक बटुआ, हाथ में भांग घोटने का खुण्डा ॥

ऐसी सूरत देखकर किसे हँसी न आवेगी ? उन दोनों ने मुश्किल से हँसी रोक कर नरेन्द्र को हाथ के इशारे से अपने पास बुलाया और धीरे से पूछा :—

"यह कौन है जिसे बड़ी चाह से तुम इस किश्ती पर लाये हो ?"

नरेन्द्र० । यह हमारा लड़कपन का साथी है ॥

औरत० । क्या तुमको ऐसे ही लोगों का साथ रहा है ?

नरेन्द्र० । नहीं दिल बहलाने के लिये इसको बराबर अपने साथ रखते रहे, बड़ा खैरखाह है और जान से ज्यादे हमको मानता है, कुछ थोड़ा सा बेवकूफ भी है मगर बाज दफे इसे दूर की सूझती है । अब तो यह साथ ही है इसका और हाल तुमको रास्ते ही में मालूम हो जायगा ॥

औरत० । इसका और तुम्हारा साथ कब हुआ ?

नरेन्द्र०। मैं तो अकेला घर से निकला, यह मुझे ढूंढता हुआ आ पहुंचा, देखो मैं इससे हाल पूछता हूं आप ही मालूम हो जायगा॥

औरत०। इसका नाम क्या है?

नरेन्द्र०। इसका नाम सभों ने बहादुरसिंह रक्खा है॥

बहादुरसिंह का नाम सुनकर फिर उन दोनों को हँसी आई॥

बहादुर०। क्यों जी नरेन्द्र! यह दोनों घड़ी घड़ी मुझको देख कर हँसती क्यों हैं? कहीं मुझे भी गुस्सा आ जाय तो क्या हो?

नरेन्द्र०। इसमें रञ्ज होने की कौन सी बात है, जो कोई तुम्हें देख कर खुश हो उससे रञ्ज होना क्या मुनासिब है?

बहादुर०। नहीं मैंने कहा शायद अगर इन दोनों को किसी बात की शेखी हो तो मैं अभी तैयार हूं आवें कुश्ती लड़के जी का हौसला मिटा लें॥

नरेन्द्र०। वाह औरतों ही से कुश्ती लड़ कर पहलवानी दिखाओगे?

बहादुर०। जी हां, कलके लड़के हो कभी औरतों से पाला नहीं पड़ा है, सुनो और मेरी नसीहत याद रक्खो, दस मर्द से लड़ जाना कोई मुश्किल नहीं मगर एक औरत का मुकाबला करना जरा टेढ़ी खीर है॥

नरेन्द्र०। सच है सच है, भला यह तो कहो तुम इस जङ्गल में कहां से पैदा हो गये?

बहादुर० । तुम तो चुपचाप से निकल भागे समझे कि बस हो चुका अब पता कौन लगाता है मगर इसको भूल ही गये कि मै चालीस कम सौ कोस से तुम्हारी बू पा लेता हूं । खोजता खोजता यहां आही पहुंचा । मैं तो डरा (रुक कर) राम राम डरा काहे को मैं तो किसी से कभी डरता ही नहीं, कहने को कुछ मुंह से निकलता है कुछ ॥

दोनों औरत० । (हँस कर) क्या डींग को लेते हैं शेखी किये बिना न मालूम क्या बिगड़ा जाता है, अजी ऐसे जङ्गल मैदान में जहां हज़ारों डाकू घूमते रहते हैं वड़े वड़े डर जाते हैं अगर तुम डरे तो कौनसी बात है ॥

बहादुर० । सच तो कहा मगर मैं......तो......कहीं डरता ही नहीं, हां यह कहो सचमुच इस जङ्गल में डाकू घूमा करते है ?

नरेन्द्र० । बेशक, अभी हमीं से डाकुओं से मुठभेड़ हो गई थी बारे बच गये ॥

बहादुर०। अफसोस हम न हुए एक को भी जीता न छोड़ते. कै थे ?

नरेन्द्र० । चालीस पचास ॥

बहादुर० । बस ! इतनों से क्या डरना, अच्छा इन सब बातों को जाने दो मेरी सुनो, अब सवेरा हुआ चाहता है, यह किनारे का जङ्गल भी बड़ा ही रमणीक है चलो किश्ती लगाओ मैं भङ्ग पीसता हूं तुम भी पीओ इन दोनों को भी पिलाओ, यह

भी क्या याद करेंगी कि किसी के हाथ की भङ्ग पी थी। बस इसी जगह दिसा फरागत स्नान पूजा से छुट्टी पाकर फिर जहां चाहे चलना ॥

"अच्छा चलो" कहकर नरेन्द्र ने डांड़ उठाया और किश्ती का मुंह किनारे की तरफ फेरा ही था कि किनारे से गीदड़ के चिल्लाने की आवाज आई ॥

बहादुर०। बस बस, नहीं नहीं, इधर नहीं और आगे चलो यह जङ्गल किसी काम का नहीं, बेपर्द है, आगे घने जङ्गल में ठीक होगा ॥

इतना सुनते ही दोनों औरतें खिलखिला कर हँस पड़ीं. नरेन्द्र ने भी मुस्कुरा दिया ॥

बहादुर०। बस बात तो सोचा नहीं और हँस दिया, क्या तुम लोगों ने समझ लिया कि बहादुरसिंह गीदड़ की आवाज सुन कर डर गये ? ऐसा ही डरते तो तुमको खोजने क्या निकलते ? मुझको आज रास्ते में ऐसे ऐसे जङ्गल पड़े हैं जहां पचासों पेड़ इकट्ठे एक से एक सटे और घने दिखाई पड़ते थे ॥

बहादुरसिंह की इस बात ने तीनों को और भी हँसाया, नरेन्द्र तो जानते ही थे कि बहादुरसिंह बड़ा डरपोक है मगर बात बनाने से नहीं चूकता, यह तो उनकी मुहब्बत में घर से निकल पड़ा नहीं तो कभी अकेला दूर जाने वाला थोड़े ही था ॥

नरेन्द्र०। बस जो असल बात थी तुमने खुद कह दी यह

भी मालूम हो गया कि तुम बड़े बड़े घने जङ्गलों को पार करते हुए मुझसे मिले हौ, उस छोटे जङ्गल में नहीं पहुंचे जहां मैं फँसा था ॥

बहादुर० । जी हां इस में भी कोई झूठ है। फिर तुम किनारे पर किश्ती लिये ही जाते हौ सुनते नहीं कि मैं क्या कहता हूं !!

नरेन्द्र० । (झुंझला कर) अजब उल्लू है। क्या सैकड़ों कोस तक जङ्गल ही मिलता जायगा ? जङ्गल कब का पीछे छूट गया यह भी कोई जङ्गल है ? दस बीस बेरी के पेड़ देखे और कह दिया जङ्गल है । अब कौन सा घना जङ्गल मिलेगा ? देखता नहीं आगे बालू ही बालू दिखाई देता है ॥

बहादुर० । वाह ! मुझी को उल्लू बनाने लगे, मैं तो खुद कहता हूं कि आगे किसी जङ्गल के किनारे नाव लगाओ यहां मैदान है ॥

नरेन्द्र० । बस आगे यह भी नहीं मिलेगा ॥

नरेन्द्र ने बहादुरसिंह की बकवाद पर ध्यान न दिया, किश्ती किनारे पर लगा कर बहादुरसिंह से उतरने के लिये कहा मगर वह न उतरा, कहने लगा, "मैं इसी किश्ती पर भङ्ग बना लूंगा तब उतरूंगा तुम भी बैठो, जल्दी क्या है अभी तो अच्छी तरह सवेरा भी नहीं हुआ ॥"

औरत० । अच्छा इनको यहां बैठने दो हमलोग नीचे उतरें ॥

नरेन्द्र० अच्छा चलो ॥

नरेन्द्र ने लग्गी गाड़ के किश्ती बांध दी और हाथ का सहारा दे दोनों औरतों को किनारे पर उतारा और उनके बैठने के लिये अपने कमर से चादर खोल जमीन पर बिछा दिया॥

जब से नरेन्द्र ने इन दोनों औरतों को फाँसी और कब्र से बचाया और किश्ती पर सवार होकर पूरे चन्द्रमा की रोशनी में इनकी सूरत देखी तभी से इनपर जी जान से आशिक हो गया। वे दोनों औरतें भी पूरी मुहब्बत की निगाह से इनको देखने लगीं बल्कि इनको पाकर अपनी बिल्कुल तकलीफ भूल गईं और सोच लिया कि अब जन्म भर इनका साथ कभी न छोड़ेंगी॥

तीनों किनारे पर बैठे, नरेन्द्र ने कहा, "उस भड़ेड़ी मसखरे की बातचीत में तुम दोनों का हाल भी न सुना॥"

एक औरत०। क्या हर्ज है दासी साथ में हई है जब चाहे इस की रामकहानी सुन लेना अब तो मौका हाल कहने का है नहीं॥

नरेन्द्र०। अच्छा हाल किसी दूसरे वक्त सुन लेंगे मगर अपना नाम तो इस वक्त बता दो॥

एक औरत०। (जो पेड़ पर से उतारी गई थी) जी मेरा नाम तो मोहनी है और इसका नाम गुलाब है जिसे आपने जमीन से निकाल कर बचाया॥

नरेन्द्र०। मोहनी! अहा क्या सुन्दर नाम है॥

इतने में दूर से कुत्ते के भूकने की आवाज आई जिसे सुन नरेन्द्र ने मोहनी की तरफ देखके कहा, "मालूम होता है यहां पास ही कोई गांव है क्योंकि कुत्ते सिवाय आबादी के और कहीं नहीं रहते। अच्छी बात हो अगर हम लोग आज का दिन इसी गांव में काटें क्योंकि दिन की धूप इस खुली हुई छोटी किश्ती में नहीं बर्दाश्त होगी॥

मोहनी०। आपका कहना सच है मगर हम लोगों का किसी छोटे गाँव में रहना उचित नहीं इससे तो दिन भर की धूप सह कर इसी किश्ती पर सफर करना ठीक होगा॥

गुलाब०। (इधर उधर देख कर) देखो वह एक नाव की मस्तूल दिखाई देती है (उठ कर) वाह वाह! यह तो बड़ी भारी छप्पर की नाव है अगर इसे किराया कर लिया जाय तो बहुत अच्छा हो, इसी पर सफर करते हुए हमलोग किसी शहर में बड़े आराम के साथ पहुंच जायेंगे॥

नरेन्द्र०। (खड़े होकर और उस नाव को देख कर) हां ठीक तो है॥

मोहनी०। बस अब देर क्या है उसी नाव को ठीक कीजिये चलिये इसी किश्ती पर बैठ कर वहां चलें॥

नरेन्द्र०। अभी तुम लोगों को वहां ले चलना ठीक न होगा कौन ठिकाना वह नाव खाली है या किसी का माल लदा है, अगर दूसरे के किराये में होगी तो मुझे कैसे मिल सकेगी। तुम

दोनों अच्छे कपड़े और गहने पहिरे हो कोई देखेगा तो क्या समझेगा ? कोई ऐसी तर्कीब भी नहीं हो सकती कि तुम दोनों को छिपा कर वहां तक ले चलूं । अगर नाव भरी न हो तो उसी जगह किराये कर लूं । इस तरह बहुत आदमियों के बीच में तुम दोनों को कैसे ले चलूं ॥

गुलाब०। चलिये नाव खाली हुई तो सवार हो लेंगे नहीं तो अभी चल कर कहीं ठहरेंगे और आज का दिन बितावेंगे ॥

नरेन्द्र०। देखो आगे दूर तक बालू ही बालू दिखाई पड़ता है। कहीं पेड़ का नाम निशान नहीं है कहां ठहरेंगे ?

मोहनी०। फिर आपकी क्या राय है ?

नरेन्द्र०। मैं चाहता हूं कि तुम दोनों यहां ठहरो बहादुरसिंह भी तुम्हारे पास हैं मैं बहुत जल्द जाकर उस नाव को देख आता हूं अगर खाली होगी तो तुम लोगों को लेजा कर सवार कराऊंगा नहीं तो इसी जगह लौट कर हम लोग दिन बितावेंगे रात को फिर चलेंगे ॥

मोहनी०। नहीं मैं अब तुम्हारा साथ न छोड़ूंगी क्या जाने तुम कहीं........

नरेन्द्र०। वाह ! मैं कहां चला जाऊंगा ? बात की बात में तो लौट आता हूं ॥

मोहनी०। (आंख डबडबा कर) मैं क्या..........

नरेन्द्र ने मोहनी की आंखों में आंसू डबडबाते हुए देखा और

बेचैन हो गया हाथ थाम कर बोला; "हैं ! यह क्या ? यह आंसू कैसा ?"

मोहनी का जी पूरे तौर से उमड़ आया, आंसुओं की तार बँध गई, हिचकी लेकर बोली, "न मालूम क्यों मेरा कलेजा काँप रहा है, खुद बखुद रोने को जी चाहता है, बस तुम मत जाओ इसी जगह दिन काटो जो कुछ होगा देखा जायगा ॥"

नरेन्द्र ने बहुत तरह से मोहनी को समझा बुझा कर इस बात पर राजी किया कि वे जाकर नाव का हाल दर्याफ़ कर आवें ॥

हमारे बहादुरसिंह अभी तक भङ्ग घोट रहे हैं दीन दुनिया की कुछ खबर नहीं, यह भी नहीं मालूम कि नरेन्द्र, मोहनी और गुलाब में क्या क्या बातचीत हुई । दोनों पैरों से भङ्ग पीसने की कूंडी पकड़े हुए नीचे के होंठ को दाँतों से दबाये कभी बाईं तरफ कभी दाहिनी तरफ सोंटा घुमा घुमा भङ्ग पीस रहे हैं ॥

नरेन्द्र ने पुकार कर कहा, "अजी ओ बहादुर भङ्गी ! अभी तक तुम्हारी भङ्ग तैयार नहीं हुई ? देखो इधर खयाल रक्खो हम जाते हैं ॥"

बहादुरसिंह ने गुस्से की निगाह से नरेन्द्र की तरफ देख कर कहा, "बस खबरदार ! हमको भङ्गी का कहना इतना बुरा न मालूम हुआ, जितना तुम्हारे इस कहने का रञ्ज हुआ कि हम जाते हैं । क्या मजाल जो तुम कहीं जा सको एक क्या दस

करोड़ नरेन्द्र बन कर आओ तब तो जाने ही न दूं, एक दफे तुम्हें अकेले छोड़के फल पा लिया, अब क्या मैं उल्लू हूं जो घड़ी घड़ी ऐसा ही करूँ?"

नरेन्द्र०। अबे कुछ सुनता समझता भी है कि अपनी ही टाँय टाँय किये जाता है॥

बहादुर०। बस बस मैं सब सुन चुका और समझ गया बैठो सीधे होकर॥

नरेन्द्र०। अजी मैं नाव किराये करने जाता हूं और कहीं नहीं जाता॥

बहादुर०। नाव! कैसी नाव? यह क्या छकड़ा है?

नरेन्द्र०। (हँस कर) यह भी नाव है मगर मैं बड़ी नाव छप्पर वाली किराये करने जाता हूं॥

बहादुर०। कहां है छप्पर वाली नाव?

नरेन्द्र०। (हाथ से इशारा करके) वह देखो॥

बहादुर०। हाँ है तो (सोंटा रख कर) मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं॥

नरेन्द्र०। (मोहनी और गुलाब को बता कर) इनके पास कौन रहेगा?

बहादुर०। तुम॥

नरेन्द्र०। और तुम किसके साथ जाओगे?

बहादुर०। तुम्हारे साथ॥

बहादुरसिंह की इस बात ने सभों को हँसा दिया। मोहनी जो उदास बैठी थी वह भी एकदम हँस पड़ी॥

बहादुर०। हँसने की कौन बात है (कुछ सोच कर) हां हां ठीक है मुझसे गलती हुई मैं भूल गया अच्छा जाओ सीधे उस नाव की तरफ चले जाओ मैं देख रहा हूं इधर उधर हटे और मैंने डण्डा फेंक कर मारा॥

"अच्छा यही सही।" यह कह कर नरेन्द्र उस बड़ी नाव की तरफ रवाने हुए, मोहनी और बहादुरसिंह की निगाह बराबर नरेन्द्र की तरफ थी॥

चौथा बयान।

हमारा बहादुर नौजवान इन तीनों को उसी जगह छोड़ उस नाव की तरफ चला और यह इरादा कर लिया कि उसे किराये करके आराम से अपना सफर तमाम करेगा। इतना तो मालूम ही हो गया कि उसका नाम नरेन्द्रसिंह है अब हमको भी इसी नाम से इस उपन्यास में लिखना ठीक होगा॥

देखने में वह नाव बहुत पास मालूम देती थी मगर नरेन्द्र-सिंह को वहां पहुंचते पहुंचते पहर भर से ज्यादा दिन चढ़ आया। पहुंच कर उन्होंने किसी आदमी को उस नाव के ऊपर न देखा इस सबब से नाव के पास जाकर अन्दर की तरफ झांका॥

यह नाव बहुत बड़ी थी और इस लायक थी कि हजार मन से ज्यादा बोझ लाद सके। फूस का छप्पर उसके ऊपर और चारो तरफ टट्टियों से घेरा हुआ था। दो चार खिड़कियां भी दोनों तरफ इस लायक थीं कि भीतर बैठा हुआ आदमी बाहर की तरफ देख सके। नरेन्द्रसिंह को झांकते देख एक आदमी अन्दर से बाहर निकल आया जिसकी सूरत देखने से यह मालूम होता था कि यह मल्लाह है, उसने इनसे पूछा कि "आप क्या चाहते हैं?"

नरेन्द्र०। क्या यह नाव किराये हो सकती है?

मल्लाह० । हां हां आप इसे किराये पर ले सकते हैं ॥

नरेन्द्र० । इसका मालिक कौन है ?

यह सुन कर मल्लाह ने अन्दर की तरफ मुंह कर "बिहारी ! बिहारी !!" करके आवाज दी । साथ ही आवाज के एक मल्लाह ने बाहर निकल कर पूछा, "क्या है ?"

पहिला मल्लाह० । सर्कार नाव किराये किया चाहते हैं ॥

दूसरा० । (नरेन्द्रसिंह की तरफ देख कर) कुछ माल लादा जायगा ?

नरेन्द्र० । नहीं हम दो तीन आदमी हैं जो इस पर सवार होकर सफर किया चाहते हैं ॥

मल्लाह० । कहां तक जाइयेगा ?

नरेन्द्र० । हमलोग पटने तक जायंगे ॥

मल्लाह० । तो आपके और साथी सब कहां है ?

नरेन्द्र० । (हाथ का इशारा करके) उस तरफ थोड़ी दूर पर हैं तुम बातचीत कर लो तो बुला लावें ॥

मल्लाह० । सवारी जनानी भी है या सब मर्दाने ही हैं ?

नरेन्द्र० । हां जनाने भी हैं ॥

मल्लाह० । अच्छा आइये ऊपर आकर भीतर से नाव को देख लीजिये कि जनानी सवारी के सुबीते की भी जगह इसमें बनी हुई है ?

यह कह मल्लाह ने एक काठ की सीढ़ी नीचे गिरा दी और

नरेन्द्र सिंह का हाथ पकड़ कर ऊपर चढ़ा लिया और अपने साथ छोपड़ी के अन्दर ले गये। नरेन्द्र सिंह ने अन्दर लगभग पन्द्रह मल्लाहों को बैठे पाया जिनमें पाँच छः तो बड़ी भयानक सूरत के थे, उनकी काली काली सूरत और बड़ी बड़ी आंखें देखने ही से डर मालूम होता था। एक तरफ कुछ थोड़ी सी कुल्हाड़ियां, गड़ांसे, भेजे और तलवारों का ढेर लगा हुआ था और दस बीस गठड़ियां भी ऐसी पड़ी थीं कि जिसके देखने से किसी सौदागर की मालूम होती थीं। इन चीजों को देख नरेन्द्रसिंह के जी में कई तरह के खुटके पैदा हुए और इस नाव को किराये करने से इन्कार किया। मल्लाहों की तरफ देख कर बोले, "हमलोग सिर्फ चार आदमी हैं नाव बहुत भारी है और सफर भी बहुत दूर तक का है यह नाव मेरे काम की नहीं है।" बिहारी ने कहा—"एक नाव बहुत छोटी पटी हुई हमारे पास और भी है अगर उस पर आप सफर करें तो सिर्फ एक ही मल्लाह आप को पटने तक पहुंचा सकेगा क्योंकि वह नाव चलने में बहुत सुबुक है, अगर ज़रा सा आप यहां ठहरें तो उस नाव को यहां लाकर दिखला दूं॥"

नरेन्द्र०। वह नाव कहां पर है?

बिहारी०। पास ही है जहां इस नदी का मोड़ घूमा है॥

नरेन्द्रसिंह को इस बात का शक तो जरूर हुआ कि ये लोग डाकू हैं, मगर बिहारी की बात सुन कर कि एक नाव और है

और एक ही आदमी आपको उस पर पटने पहुंचा देगा सोचने लगे कि इसमें हमारा कोई हर्ज नहीं, अगर एक आदमी डाकू भी होगा तो हमारा कुछ न कर सकेगा। बिहारी से कहा— "अच्छा जाओ उस नाव को ले आओ मगर जल्द आना ॥"

बिहारी ने अपने साथियों की तरफ देख कर कहा—"तुम लोग भी आओ तो उस नाव को जल्दी खैंच लावें ॥"

अपने साथियों को लेकर बिहारी नाव के नीचे उतरा और थोड़ी दूर तक दरिया के किनारे किनारे जाकर पास के जङ्गल में गायब हो गया ॥

बिहारी को गये घण्टा भर से ज्यादा हो गया. नरेन्द्रसिंह बैठे बैठे घबड़ा उठे, दूसरे मल्लाहों से जो उस नाव में थे बोले, "तुम्हारा बिहारी नाव लेकर अभी तक न आया, हमारे साथी घबड़ा रहे होंगे, हम तो जाते हैं ॥"

इसके जवाब में एक मल्लाह ने कहा, "चढ़ाव की तरफ नाव लाने में देर लगती ही है, आप जरा और ठहर जायें आता ही होगा ॥

घण्टे भर तक नरेन्द्रसिंह और ठहरे मगर नाव न आई, घबड़ा उठे, मोहनी की तरफ जो लगा हुआ था मल्लाहों की बात पर ध्यान न दिया नाव से नीचे उतर आये और उस तरफ चले जहां अपने साथियों को छोड़ा था ॥

आते वक्त भी इतनी ही देर हुई यहां तक कि दोपहर हो

गया जब उस ठिकाने पहुंचे मगर अफसोस! उस बेचारी मोहनी और उसकी बहिन गुलाब को वहां न पाया और अपने लड़कपन के दोस्त बहादुरसिंह को भी न देखा जिसे भङ्ग घोटने छोड़ गये थे, हां किश्ती ज्यों की त्यों वहां ही बंधी थी॥

पांचवां बयान।

मोहनी, गुलाब और अपने दोस्त बहादुरसिंह को न देखने से नरेन्द्रसिंह को कितना ताज्जुब, अफसोस, तरद्दुद, फिक्र, गम और सदमा हुआ यह वही जानते होंगे, घबड़ा कर चारो तरफ देखने लगे जब किसी को न देखा तो बोले, "हाय मैं उसे अकेले क्यों छोड़ गया! मेरे सिर कैसी कमबख्ती सवार थी जो दूसरी नाव किराये करने गया! हाय जिस किश्ती ने बेचारी मोहनी और गुलाब की जान बचाई और जिस किश्ती पर बैठ कर हम लोग हंसते खेलते यहां तक पहुंचे, उसी को छोड़ना चाहा! परमेश्वर ने इसी की सजा दी। हाय कम्बख्त दिल! उस वक्त धूप की सूझी! बेचारी मोहनी धूप का कुछ ख्याल न करके इसी किश्ती पर सफर करने को तैयार थी मगर तुझे गर्मी सताने लगी! अब उसकी जुदाई की आग में देख कब तक तुझे जलना पड़ेगा। हाय! वह कहां चली गई! क्या मौका पाकर भाग तो नहीं गई! नहीं नहीं, उसे छिप कर भागने की क्या जरूरत थी! मैं तो उसे उसके घर तक पहुंचा ही देने वाला था, मैंने उसका क्या बिगाड़ा था कि छिप कर भाग जाती! फिर बहादुरसिंह कहां चला गया! वह तो मेरा साथ छोड़ने वाला न था। कोई दुश्मन पहुंचा जिसके सबब से बेचारी मोहनी

और गुलाब को फिर दुःख भोगना पड़ा, कहीं उन नाव वाले मल्लाहों की तो बदमाशी नहीं ! सूरत ही से वे लोग बड़े दुष्ट और डाकू मालूम होते थे, वे किश्ती लेने नहीं गये घूम फिर धोखा दे जरूर यहां आये और तीनों को ले भागे, क्योंकि मुझसे पहिले ही उन लोगों को मालूम हो चुका था कि हमारे साथ औरतें भी हैं और उन्होंने पूछा था कि कहां हैं ? हाय ! मैंने क्यों इशारे से बतलाया कि इस तरफ हैं ! जरूर उन्हीं लोगों की शैतानी है । खैर अब मोहनी ही नहीं तो मैं जीकर क्या करूंगा इससे यही बेहतर है कि उन लोगों से लड़ कर अपनी जान देदूं, जो हो दो चार की जान तो जरूर ही लूंगा ॥”

यह सोचते २ हमारे नरेन्द्रसिंह को बेहिसाब गुस्सा चढ़ आया, बड़ी बड़ी आंखें सुर्ख हो गईं, बदन कांपने लगा, घड़ी घड़ी तलवार के कब्जे पर हाथ जाने लगा । बहुत थोड़ी देर तक इस हालत में खड़े रह कर कुछ सोचते रहे, बाद इसके तेजी के साथ उस नाव की तरफ चले ॥

पहिली दफे नरेन्द्रसिंह जब उस किश्ती की तरफ गये थे तब इनको रास्ते में बहुत देर लगी थी मगर अब की दफे घण्टे ही भर में उस नाव के पास जा पहुंचे ॥

अब की मर्तबे नाव के ऊपर जाने के लिये काठ की सीढ़ी नहीं लगी थी, मगर बहादुर नरेन्द्रसिंह ने इसका कुछ ख्याल न किया झट म्यान से तलवार बाहर निकाल ली और उछल

कर नाव के ऊपर चढ़ गये, मगर वहां किसी को न पाया, उन शैतानों में से एक को भी न पाया जिन्हें पहिली मर्तबे देखा था.हां कुछ गठड़ियां और दस पांच कुल्हाड़ियां इधर उधर पड़ी थीं ॥

इस वक्त बहादुर नरेन्द्रसिंह इस गम को न बर्दाश्त कर सके, उनका सिर घूमने लगा और वह नङ्गी तलवार हाथ में लिये हुए बदहवास होकर उसी नाव पर धम्म से गिर पड़े ॥

छठवां बयान।

एक छोटी सी कोठड़ी में आले पर चिराग जल रहा है. तीन तरफ दीवार हैं और एक तरफ लोहे के मोटे मोटे छड़ लगे हुए हैं जिसमें छोटा सा दरवाजा भी लोहे की सीखों का बना हुआ इस समय बन्द है और उसमें वाहर से ताला भी बन्द है जिसके पास ही एक आदमी भी बैठा है, शायद पहरे वाला हो। यह मकान हर तरफ से बन्द है, कहीं से आसमान दिखाई नहीं देता। आजकल शुक्ल पक्ष है मगर चन्द्रमा की रोशनी भी नहीं दिखाई देती, इससे मालूम होता है कि यह जमीन के अन्दर कोई तहखाना है जहां दिन और रात का भेद कुछ नहीं जाना जाता। उसी में बहादुरसिंह बैठा हुआ धीरे धीरे कुछ बोल रहा है॥

"हां, कहते थे नालायक से कि मुझे मत सता, मैं ब्राह्मण हूं, मेरी आह पड़ेगी तो जल के भस्म हो जायगा मगर सुनता कौन है? अपनी बहादुरी के नशे में वह मानता किसको है? दौलत के घमण्ड में वह किसी को समझता ही क्या है? खूबसूरत खूबसूरत पाँच औरतें क्या मिल गईं कि दिमाग आस्मान पर चढ़ गया, रहो बचा दो औरतें तो छिन ही गईं बाकी वह तीनों भी छिन जाती हैं और जङ्गल में गड़ी हुई तेरी दौलत भी तेरे हाथ

से निकल जाय ते मेरा कलेजा ठण्ढा हो। नालायक मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था कि मुझे राह चलते पकड़ लिया और साल भर से मुफ़ में अपनी खिदमत करा रहा है, जान नहीं छोड़ता। हाय! मेरे मां, बाप, लड़के वाले, जोरू जाने क्या कहते होंगे, मुझे कहां कहां ढूंढते होंगे. खैर उनकी तो कुछ पर्वाह नहीं मेरा तो शरीर ही सङ्कट में पड़ गया था, दिन में बीस बीस मर्तबे गदहे को भङ्ग पीस पीस के पिलानी पड़ती थी, चलो उससे तो छुट्टी हुई! मेरा क्या? वहां भी खाने को मिलता था यहां भी मिलेगा, घोड़े को कोई ले जाय खाने को घास देहीगा। मेहनत से जान बची अब इसी कोठड़ी में बैठे डण्ड पेलेंगे। वाहरे बहादुरसिंह! तू भी किस्मत का बड़ा ही जबर्दस्त है॥"

इस कोठड़ी के बाहर बैठा हुआ पहरे वाला अपनी गर्दन नीचे किये हुए बहादुरसिंह की यह मनभनाहट सुन रहा था। जब बहादुरसिंह अपनी बात तमाम कर चुका तब उसने इनकी तरफ़ सिर उठा कर देखा और कहा—"मालूम होता है आपका नाम बहादुरसिंह है?"

बहादुर०। (चौंक कर) हैं! यह आपने कैसे जाना?

पहरे०। आपकी बातों ही से मालूम होता है॥

बहादुर०। हमारी कौन सी बातें?

पहरे०। अजी अभी तो तुम कह रहे थे कि "वाहरे बहादुरसिंह तू भी किस्मत का बड़ा [illegible] है॥"

बहादुर०। हां ठीक है, मेरा नाम बहादुरसिंह है॥

पहरे०। आप बड़े लापर्वाह मालूम होते हैं॥

बहा०। हां भाई साहब लापरवाह तो हैं और फिर आप ही सोचिये कि मेरे ऐसा आदमी अगर लापर्वाह न होगा तो और दुनिया में होगा कौन? जात का ब्राह्मण हूं, कहीं रहूं कोई खाने को दे मुझे ले लेने में कोई शर्म नहीं, कमा कर खाने की फिक्र नहीं, जोरू के पास कुछ रुपये हैं वही अपना सौदा सुलफ बाजार से लाती है पकाती है खिलाती है, महीनों तक पीने के लिये भङ्ग भी वही बेचारी ला देती है, मैं अपना घोंटता पीता हूं। फिर मुझे फिक्र काहे की? हां थोड़े दिन इस नालायक नरेन्द्र के साथ रहना पड़ा तो अलबत्ते कुछ फिक्र ने आ घेरा था, अब जरा आराम में बैठे बस फट हुक्म हुआ "भङ्ग पीसो!" यहां तक कि दिन रात भङ्ग पीसते पीसते जी घबड़ा गया, अब उससे भी बेफिक्र हूं। यहां तो काम काज कुछ करना ही नहीं है बैठे बैठे खाना है, हां भङ्ग की तकलीफ न होने पावे सो आपकी कृपा होगी तो भङ्ग भी पीने को मिल ही जायगी, आज मैं अपने हाथ की बूटी पिलाऊंगा देखो तो इसके आगे स्वर्ग कुछ मालूम पड़ता है? और सब से भारी बात तो यह है कि मुझे कुछ लालच नहीं, लालच के नाम ही से मैं कोसों भागता हूं नहीं तो नरेन्द्र की लाखों रुपये की सम्पत्ति जो मेरी आंखों के सामने रक्खी हुई है ले लेता और मजे में राजा बन के बैठता मगर मैं तो सोचता हूं

कि राजा से हज़ार दर्जे बढ़ कर मैं ख़ुशी से अपनी जिन्दगी काटता हूं, कौन रुपये बटोर कर अपने ऊपर कम्बख़्ती ले ॥

पहरे० । सच है सच है (मन में) यह कुछ पागल भी मालूम होता है । अगर नरेन्द्रसिंह का खजाना इसे मालूम है तो फुसला कर पता ले लेना बड़ी बात नहीं है ॥

बहादुर० । क्यों भाई तुम भङ्ग पीते हो कि नहीं ?

पहरे० । मुझे तो बिना भङ्ग पीये किसी दिन चैन ही नहीं पड़ता ॥

बहादुर० । (खुश होकर) वाह वाह वाह, बड़े खुशी की बात तुमने सुनाई, तब तो हम तुम दोनों एक हैं, बस आज से हमारे तुम्हारे दोस्ती हो गई । मालूम होता है तुम भी ब्राह्मण या क्षत्री हो ॥

पहरे० । हां मैं क्षत्री हूं ॥

बहादुर० । अहा हा ! फिर क्या कहना है, आओ ज़रा गले गले तो मिल लें ॥

पहरे० । (मन में) अब क्या है इससे नरेन्द्रसिंह की दौलत का पता लगना बहुत सहज है, अगर वह दौलत मिल जाय तो मैं जन्मभर कमाने से छुट्टी पाऊं और अपने साथियों को अँगूठा दिखा किनारे हो जाऊं ॥

बहादुर० । बस सोचते क्या हो आओ दोस्त जल्दी गले मिलो अब मैं नहीं मानता ॥

पहरे वाला खुश होकर अन्दर गया और बहादुरसिंह से खूब गले गले मिला॥

बहादुर०। (मन में) फाँसा साले को अब क्या है!!

पहरेवाला०। भाई बहादुरसिंह! अब तो हमारे तुम्हारे दोस्ती हो ही गई मगर इस दोस्ती को छिपाये रहना चाहिये क्योंकि अगर हमारा सर्दार जान जायगा कि इन दोनों में दोस्ती होगई तो झट मुझे यहां से हटा लेगा और किसी दूसरे को यहां पहरे पर बैठा देगा॥

बहादुर०। उसकी ऐसी तैसी। कभी मालूम तो हो नहीं कि इन दोनों में दोस्ती है, जब वह आवेगा तो घड़ी भर तक तुमको गालियां ही दिया करूंगा, तब कैसे समझेगा?

पहरे०। हां ठीक है ऐसा ही करना, मैं भी ऊपर के मन से तुम पर सख़्त पहरा रक्खूंगा। अब उसके आने का वक्त हुआ है मैं फिर ताला बन्द करके बाहर जा बैठता हूं॥

बहादुर०। जरूर, बहुत जल्दी। भला यह तो बताओ तुम्हारा नाम क्या है?

पहरे०। मेरा नाम भोलासिंह है॥

बहादुर०। वाह भाई भोलासिंह! हकीकत में तुम बड़े ही भोले हो। छल कपट जरा भी तुम्हारे चित्त में नहीं है॥

पहरे वाला भोलासिंह बहादुरसिंह से गले गले मिल के बाहर निकल आया और फिर उस कोठड़ी के दर्वाजे में ताला लगा

कर उसी तरह बाहर बैठ गया और बहादुरसिंह से धीरे धीरे बातचीत करने लगा ॥

बहादुर०। क्यों दोस्त भोलासिंह! क्या कभी सूर्य या चन्द्रमा का दर्शन न कराओगे ? इस अँधेरे में बैठे बैठे तो कई दिन हो गये ॥

भोलासिंह० । दोस्त घबड़ाओ मत, आज ही तुम्हें इस तहखाने के बाहर ले चलता हूं ॥

बहादुर० । वाह वाह ! तब तो मजा ही हो ॥

भोला० । क्यों दोस्त क्या अच्छी बात हो अगर नरेन्द्रसिंह की गड़ी हुई दौलत निकाल कर हम तुम दोनों जन्मभर खुशी से गुजारा करें !!

बहादुर० । नहीं नहीं नहीं, ऐसा न होगा । मैं लालच को अपने पास कभी न आने दूंगा । हां तुमको जरूरत हो तो चलो बता दूं निकाल लो, मैं एक पैसा न लूंगा ॥

भोला० । अच्छा हमीं को बता दो ॥

बहादुर० । आज ही चलो, यह कौन सी बड़ी बात है ॥

भोला० । अच्छा आज मौका पाकर हम तुम निकल चलेंगे ॥

बहादुर० । तुम्हारा अफसर तो अभी तक न आया ॥

भोला० । हां आज देर होगई अब उसके आने की भी उम्मीद नहीं है ॥

बहादुर० । तो चलो फिर बाहर ही की हवा खायें ॥

भोला०। घड़ी भर और ठहरो तब तक अगर न आया तो फिर आज न आवेगा, हां यह तो कहो नरेन्द्र की दौलत कहां पर है ?

बहादुर० । जहां उसका मकान है उसके कोस या दो कोस पूरब हट के। मुश्किल तो यह है कि मैं कमज़ोर आदमी न मालूम के दिन में वहां पहुंचूंगा ॥

भोला० । नहीं नहीं, मैं जाकर अभी दो घोड़े ले आता हूं। हमारे सर्दार के यहां जितने घोड़े हैं सभी तेज चलने वाले हैं, सभों में से चुनके दो घोड़े ले आता हूं अगर कोई हमलोगों का पीछा करेगा तो न पकड़ सकेगा। तुम घोड़े पर बैठ सकते हो कि नहीं ?

बहादुर० । हां हां, भला घोड़े पर चढ़ना मुझे न आवेगा !!

थोड़ी देर के बाद भोलासिंह उस तहखाने के बाहर हुआ और आधी रात जाने के पहिले ही कसे कसाये दो उम्दे घोड़े ले आया और दोनों को एक दरख़्त के साथ बांध तहखाने में गया। बहादुरसिंह को कैद से निकाल कर बाहर ले आया और दोनों आदमी घोड़े पर सवार हो पश्चिम की तरफ रवाना हुए ॥

दो दिन तक दोनों जगह जगह पर टिकते और दम लेते बराबर चले गये, तीसरे दिन ये दोनों एक छोटी सी नदी के किनारे पहुंचे जिसके दोनों तरफ घना जङ्गल और किनारे पर बड़े बड़े साखू के दरख़्त थे। यहां पर बहादुरसिंह ने अपना घोड़ा रोका और भोलासिंह से कहा :—

"बस अब हम लोगों को इससे आगे न बढ़ना चाहिये। नरेन्द्र को जमा पूंजी इसी जगह से हाथ लगेगी॥"

भोला०। कहां पर है?

बहादुर०। पहिले यह तो बताओ कि जमीन कैसे खोदोगे? कोई फरसा या कुदाली है?

भोला०। फरसा या कुदाली तो साथ लाये नहीं॥

बहादुर०। फिर आये क्या करने? यहां तो आठ नौ पुरसा जमीन खोदनी पड़ेगी॥

भोला०। पहां कहते तो हम यह भी साथ ले लिये होते॥

बहादुर०। क्या मैंने यह नहीं कहा था कि जमीन खोद के दौलत निकालनी पड़ेगी?

भोला०। हां कहा तो था, खैर अब क्या किया जाय?

बहादुर०। किया क्या जाय बस इस जगह (हाथ से बता कर) खोदो॥

भोला०। यहां से शहर भी तो पास ही मालूम होता है, कहो तो जाकर कुदाली ले आऊं?

बहादुर०। अच्छा जाओ ले आओ। मगर सुनो तो, क्या मुझे अकेले छोड़ जाओगे?

भोला०। जैसा कहो॥

पाठक! बहादुरसिंह इस दुष्ट भोलासिंह को धोखा देकर यहां तक तो ले आये। अब ये दोनों अपनी अपनी चालाकी में

लगे हैं । भोलासिंह सोचता है कहीं ऐसा न हो कि बहादुरसिंह चपला देकर चलता बने, पीछे हम किसी लायक न रहेंगे, हमारी मण्डली वाले भी बेईमान समझ कर फिर अपने साथ न मिलावेंगे । मगर लालच ने उसे पूरे तौर से फँसा लिया था और वह कुछ बेवकूफ भी था ॥

बहादुरसिंह सोचते थे कि इस नालायक को यहां तक तो ले आये और हम हर तरह से भाग के जा भी सकते हैं, मगर असल काम तो उन दोनों औरतों का इन हरामजादों की कैद से छुड़ाना है, अगर यह लौट कर फिर वहां चला जायगा जहां से आया है तो मुश्किल होगी, अपने साथियों से कह सुनकर उन औरतों को किसी दूसरी जगह हटवा देगा तो बड़ा तरद्दुद होगा, जिस तरह हो इसे गिरफ़ार ही करना चाहिये ॥

असल में बहादुरसिंह इसे अपने कब्जे में ले आये क्योंकि इस वक्त जहां दोनों खड़े हैं यह वह जगह है जहां नरेन्द्र के छोटे भाई घोड़े पर सवार होकर रोज आया करते हैं और यहां से नरेन्द्रसिंह का मकान भी बहुत करीब है ॥

बहादुरसिंह और भोलासिंह खड़े बातचीत कर ही रहे थे कि सामने से एक सवार हाथ में नेजा लिये आता हुआ दिखाई पड़ा जो बहादुरसिंह को देख तेजी के साथ लपक कर इनके पास आया और बोला, "बहादुर ! तू कहां चला गया था, यहां क्या करता है ? कुछ भाई नरेन्द्र का भी पता लगा ?"

यही नरेन्द्रसिंह के छोटे भाई जगजीतसिंह हैं। उम्र इनकी अभी अट्ठारह वर्ष की है, खूबसूरत और नाज़ुक होने पर भी यह अपने शरीर को बहुत मजबूत बनाये रहते हैं, घोड़े पर चढ़ने, हर्बा चलाने और शिकार खेलने का शौक लड़कपन ही से है. इसके सिवाय हर तरह की विद्या में अपने को निपुण बनाये रहने का ज्यादे ध्यान रहता है। यह शौकीन भी बहुत थे मगर जब से नरेन्द्रसिंह चले गये हैं तब से इनको अपने शरीर का ध्यान ही जाता रहा, अच्छे अच्छे कपड़े पहिरने, शिकार खेलने, घूमने फिरने बल्कि दुनिया से भी ये उदास होगये, दिन रात यही सोच है कि भाई नरेन्द्र मुझे क्यों छोड़ गये! क्योंकि इनको और नरेन्द्र की मुहब्बत को जो कोई देखता वह यही कहता कि इससे बढ़ के भाइयों का प्रेम दुनिया में न होगा। इस समय यह घोड़े पर सवार होकर हवा खाने या शिकार खेलने नहीं आये है। यहां से पासही एक बनदेवी का स्थान है, उनके नित्य दर्शन करने का इन्होंने प्रण बांधा हुआ है, कुछ दिन रहे घोड़े पर सवार हो अपने घर से दो कोस चलकर रोज बनदेवी का दर्शन करने आते हैं। जब तक घर रहेंगे नेम न टूटेगा, चाहे पानी बरसे, पत्थर पड़े, आफत आवे मगर यह बिना दर्शन किये न रहेंगे। यही सबब है कि उनसे मुलाकात होने की उम्मीद में बहादुरसिंह उनके रास्ते पर आ जमा है॥

बहादुरसिंह ने कहा, "हां हां पता लगाते हैं (भेरूसिंह

की तरफ हाथ से इशारा करके) पहिले इस दुष्ट को पकड़ो जिसकी बदौलत नरेन्द्रसिंह सङ्कट में पड़े हैं॥"

बहादुरसिंह की बात सुनते ही वह नया बहादुर भोलासिंह की ओर झुका॥

अब भोलासिंह को मालूम हो गया कि बहादुरसिंह उसके साथ चालाकी खेल गये और धोखा दे कर यहां तक ले आये अब फंसाया चाहते हैं॥

उनको अपनी तरफ लपकते देख भोलासिंह ने झट म्यान से तलवार खैंच ली और इस जोर से उनके ऊपर चलाई कि अगर वह चालाकी से पैतरा बदल कर न हट जाते तो साफ दो टुकड़े नजर आते। उन्होंने भी अपने नेजे को घुमा कर बड़ी खूबसूरती के साथ एक वार भोलासिंह की टांग पर किया जिसके लगने से वह खड़ा न रह सका और फौरन जमीन पर गिर पड़ा। जमीन पर गिरते ही उसे कैद कर लिया और कमरबन्द खोल उसके हाथ पैर कस एक पेड़ के साथ बांध दिया। इसके बाद बहादुरसिंह से बोले, 'हां अब कहो क्या हाल है, हमारे नरेन्द्र भैया कहां हैं और तुम उनसे कैसे मिले?"

बहादुरसिंह ने कहा, "नरेन्द्रसिंह के चले जाने बाद उदास हो कर बिना कहे सर्कार के मैं भी उनकी खोज में निकला, कई दिन तक खोजता फिरता एक नदी के किनारे पहुंचा, दूर से एक छोटी सी किश्ती आती दिखाई पड़ी, डर के मारे मैं एक

घने पेड़ पर चढ़ गया जो उसी नदी के किनारे पर था, जब वह किश्ती पास आई तब मालूम हुआ कि हमारे बांके नरेन्द्रसिंह दो खूबसूरत और जवान औरतों को जो सिर से पैर तक जड़ाऊ जेवरों से लदी हुई थीं साथ बैठाये हँसते बोलते चले आते हैं। देखते ही मेरी तबियत खुश हो गई, मैंने पुकारा, जब वह किनारे पर आये मुलाकात हुई, मैं खुशी खुशी उनके साथ हो लिया॥

सवेरा होने पर किश्ती किनारे लगाई गई, मैं भङ्ग पीसने लगा, उन दोनों औरतों को मेरे सुपुर्द कर नरेन्द्रसिंह दूसरी नाव किराया करने चले गये जो बहुत बड़ी और वहां से दिखाई देती थी॥

नरेन्द्रसिंह के आने में बहुत देर हुई, इधर कई डाकुओं ने आकर हमलोगों को गिरफ्तार कर लिया और हमलोगों की आंखों में पट्टी बांध अपने घर ले गये। यह तो मालूम नहीं कि उन दोनों औरतों को कहां कैद किया और उनपर क्या बीती, हां मुझे एक तहखाने में कैद कर दिया और पहरे पर इस नालायक को बैठा दिया, यह नरेन्द्रसिंह की दौलत लेने मेरे साथ आया है, पूछो हरामजादे से कि इससे मुझसे कब की मुहब्बत थी जो बेचारे नरेन्द्रसिंह की दौलत मैं इसे दे देता॥

इसके बाद भोलासिंह को धोखा देने का हाल बहादुरसिंह ने सुनाया जिसे सुन वह बहुत ही हँसे। भोलासिंह पेड़ के साथ बंधा हुआ सुन सुन कर चिढ़ता, और जी ही जी में गालियां देता था॥

जगजीतसिंह ने भोलासिंह से पूछा कि तुम कौन हो, तुम्हारे सङ्गी साथी कहां रहते हैं, उन दोनों औरतों को कहां कैद कर रक्खा है? मगर सिवाय चुप रहने के भोलासिंह एक बात भी न बोला, एकदम गूंगा बन बैठा, पूछते पूछते थक गये मगर अपनी बात का कुछ भी जवाब न पाया बल्कि गुस्से में आकर भोलासिंह को कई लात भी लगाये मगर उसका भी कोई नतीजा न निकला, आखिर लाचार होकर बहादुर से बोले :—

"तुम इसी जगह ठहरो मैं इस नालायक को ले जाकर कैदखाने में डाल आता हूं और खाने पीने के सामान के साथ अपने दो चार साथियों को भी साथ लिये आता हूं तब नरेन्द्र भाई का पता लगाने और उन दोनों औरतों को डाकुओं की कैद से छुड़ाने के लिये चलूंगा॥"

बहादुरसिंह ने कहा, "बहुत अच्छा॥"

शाम होते होते अपने दो तीन साथियों के साथ कुछ खाने पीने का सामान लिये और सफर की तैयारी किये हुए जगजीतसिंह फिर आ पहुंचे। बहादुरसिंह भी भूख से दुखी हो रहा था उसे भोजन कराया, इसके बाद उससे कहा, "तुम अब घर जाओ हमलोग नरेन्द्रसिंह की खोज में जाते हैं क्योंकि तुम न तो हमलोगों के साथ चल सकते हो और न लड़ने भिड़ने में साथ दे सकते हो॥"

बहादुरसिंह ने कहा- "इसमें कोई शक नहीं कि मैं आपके

बराबर नहीं चल सकता और लड़ाई से तो मैं सौ कोस भागता हूं मगर नरेन्द्रसिंह को खोकर घर पर न बैठा जायगा, तुमलोग अपना काम करो मैं भी चुपचाप इधर उधर घूम कर उन्हें खोजूंगा ॥"

उन्होंने जवाब दिया, "खैर जो मुनासिब मालूम हो करो मुझे ठीक ठीक पता दो कि उन्हें तुमने कहां छोड़ा और तुम खुद कहां कैद रहे ?"

बहादुरसिंह पूरा पूरा पता बता कर वहां से दूसरी तरफ रवाना हुआ ॥

सातवां बयान।

आधी रात का वक्त है, चांदनी खूब खिली हुई है, इस खूबसूरत और ऊंचे मकान के पिछवाड़े वाली दीवार पर चाँदनी पड़ने से साफ मालूम होता है कि इसमें तीन बड़ी बड़ी दरीचियां हैं और बीच वाली दरीची (खिड़की) में दो औरतें बैठी आपुस में बातें कर रही हैं। नीचे की तरफ एक पाईबाग है जिसमें के खुशबूदार फूलों की महक ठण्ढी ठण्ढी हवा के साथ मिल कर उस दरीची में जा रही है और वे औरतें बातें करती हुई घड़ी घड़ी उस बाग की तरफ देखती और ऊंची सांस लेती हैं॥

इन दोनों में से एक की उम्र तेरह या चौदह वर्ष के लगभग होगी, चांद सा गोरा मुख देखने से यही मालूम होता था कि उस मामूली चाँद के अलावे यह दूसरा चाँद इस मकान की दरीची से निकला चाहता है। दर्वाजे के साथ ढासना लगाये अपना दाहिना हाथ दरीची के बाहर निकाले है जिसमें अनमोल हीरे की जड़ाऊ चूड़ियां और अँगूठियां पड़ी हुई हैं, बात बात में ऊंची सांस लेती और आँसू टपका टपका कर अपने ठीक सामने की तरफ बैठी हुई दूसरी औरत से बातें कर रही है जो खूबसूरती और गहने कपड़े के लेहाज से इसकी प्यारी सखी मालूम होती है॥

कुछ देर तक दोनों बैठी रहीं, बाद चन्द्रमुखी ने अपनी सखी की तरफ मुंह करके कहा :—

"सखी तारा ! अब मैं क्या करूं ?"

तारा० । प्यारी रम्भा ! तुम तो नाहक जिद्द करती हो अगर अपने पिता का कहना मान लो तो कोई हर्ज नहीं ॥

रम्भा० । नहीं बहिन ऐसा न होगा, धर्म तो बिगड़ेहीगा मगर इसमें बदनामी भी बड़ी होगी, दुनिया क्या कहेगी कि रम्भा की शादी नरेन्द्रसिंह से लगी, तिलक चढ़ चुका था, बारात निकल चुकी थी मगर नरेन्द्रसिंह ने ब्याह न किया, बारात में से भाग गये तब रम्भा की दूसरी शादी की गई । क्या दो शादी वाली न कहलाऊंगी ?

तारा० । सुनते हैं नरेन्द्रसिंह तुम्हारे लायक भी न था बडा ही बदसूरत और एक टांग से लँगड़ा था फिर क्यों उसके लिये जिद्द करती हो ?

रम्भा० । सखी जो हो, लँगड़ा, लूला, अन्धा, कोढ़ी चाहे जैसा हो, आखिर हमारा पति हो चुका अब मैं दूसरी जगह शादी नहीं करूंगी । पण्डित लोग लाख कसम खायँ कि इसमें कोई दोष नहीं मगर मैं एक न सुनूंगी । ज्यादे जिद्द करेंगे तो बाप, मां, भाई इत्यादि सभों को छोड़ कहीं चली जाऊंगी या अपनी जान दे दूंगी ॥

तारा० । सखी बात तो यही है, जिसके हुए उसके हुए, मगर

अफसोस है कि नरेन्द्रसिंह कहते हैं कि मैं जन्मभर शादी ही न करूंगा चाहे जो हो ॥

रम्भा० । अगर उनकी ऐसी ही मर्जी है तो क्या हर्ज है मैं भी उनके नाम पर जोगिन बन जन्म गवाऊंगी मगर मुझे निश्चय है कि अगर मेरा सामना नरेन्द्रसिंह से हो जावेगा और मैं हाथ बांध अपने को उनके पैरों पर डाल दूंगी तो वह मुझको कभी न त्यागेंगे, मगर क्या करूं ? कहां ढूढूं ? मैं तो उन्हें पहिचानती भी नहीं !!

तारा० । बहिन अब मुझे निश्चय हो गया कि तुम अपनी जिद्द न छोड़ोगी, अपने धर्म को न बिगाड़ोगी, खैर जो हो मैं भी बाप मां को छोड़ तुम्हारे दुःख सुख की साथी बनूंगी, अब यहां रहना ठीक नहीं है ॥

रम्भा० । (रोकर) प्यारी सखी ! तुम मेरे साथ क्यों अपनी जिन्दगी बिगाड़ती हो ?

तारा० । (रोकर और हाथ जोड़ कर) बहिन ! क्या तुम समझती हो कि तुमसे अलग होकर मैं सुखी रहूंगी ?

रम्भा० । नहीं..........मैं तो..! .....खैर तुम्हारी जैसी मर्जी ॥

तारा० । मैं कभी तेरा साथ नहीं छोड़ सकती ॥

रम्भा० । मैं तो आज ही इस शहर को छोड़ा चाहती हूं ॥

तारा० । अच्छा है चलो मैं भी तैयार बैठी हूं ॥

रम्भा० । भला यह तो बताओ मुझे किस भेस में यहां से निकलना चाहिये ?

तारा० । इन जेवरों और कपड़ों को उतार देना चाहिये जो हमलोग पहिरे हुए हैं और मैली धोती और एक एक चादर ले यहां से चल देना चाहिये ॥

रम्भा० । मेरी समझ में एक एक पौशाक मर्दानी भी साथ रख लेना मुनासिब होगा ॥

तारा० । जरूर ऐसा करना चाहिये । कुछ दूर जाकर हम लोग मर्दाने भेस में सफर करेंगे ॥

रम्भा० । तो अब देर करना मुनासिब नहीं है चलो ॥

तारा० । मेरी समझ में आज चलना ठीक नहीं है ॥

रम्भा० । क्यों ?

तारा० । ईश्वर की कृपा से अगर नरेन्द्रसिंह कहीं मिले भी तो हमलोग उनको कैसे पहिचानेंगे ? अगर न पहिचान सके और वह मिल कर भी फिर जुदा हो गये तो बिल्कुल मेहनत बर्बाद जायगी और दौड़ धूप ही में जिन्दगी बीतेगी ॥

रम्भा० । फिर क्या करना चाहिये ?

तारा० । तुम्हारी मां के पास नरेन्द्रसिंह की तस्वीर है किसी तरह उसे ले लेना चाहिये ॥

रम्भा० । मुझे नहीं मालूम वह तस्वीर कब आई और कहां है ॥

तारा०। तुम्हारी शादी पक्की होने के पहिले ही वह तस्वीर तुम्हारे पिता लाये थे जो अभी तक मां के पास है॥

रम्भा०। उसे किसी तरह लेना चाहिये॥

तारा०। कल जिस तरह बनेगा उस तस्वीर को मैं जरूर गायब करूंगी। एक काम और भी करना चाहिये॥

रम्भा०। वह क्या?

तारा०। एक नामी खानदान की लड़की का इस तरह यकायक अपने घर से बाहर निकलना ठीक नहीं है इसमें बड़ी बदनामी होगी, चाहे तुम कितनी ही नेक और पतिव्रता क्यों न बनो मगर कोई भी तुम्हारी नेकचलनी को न मानेगा, यहां तक कि नरेन्द्रसिंह को भी ताना मारने की जगह मिल जायगी, इससे जरूर किसी मर्द को साथ ले लेना चाहिये॥

रम्भा०। ऐसा कौन है जो मेरे पिता से बरखिलाफ़ होकर ऐसे वक्त में हमलोगों का साथ देगा और जिसके साथ बाहर जाने में बदनामी भी न होगी?

तारा०। तुम्हारा चचेरा भाई अर्जुनसिंह अगर साथ चले तो अच्छी बात है, उसके सङ्ग जाने में किसी तरह की बदनामी नहीं हो सकती, सिवाय इसके वह दिलेर और बहादुर भी है, दस बीस दुश्मनों का मुकाबिला करना उसके लिये अदनी बात है और वह साथ चलने पर राजी भी हो जायगा क्योंकि तुम्हें बहुत मानता है और तुम्हारी इस दूसरी शादी की बातचीत से

उसे भी रञ्ज है, वह नहीं चाहता कि तुम्हें किसी तरह से दुःख हो ॥

रम्भा०। बात तो बहुत ठीक कही, मुझे आशा है कि अर्जुनसिंह अवश्य मेरा साथ देगा, अच्छा कल सवेरे जब वह मामूली समय पर मुझसे मिलने आवेगा तब मैं उससे बातें करूंगी, वह नरेन्द्रसिंह को पहिचानता भी है मगर तुम वह तस्वीर लेने से न चूकना जिस तरह बने कल दिन भर में उसका बन्दोबस्त जरूर करना ॥

तारा० । ऐसा ही होगा ॥

इसके बाद वे दोनों उसी कमरे में अपनी अपनी चारपाई पर सो रहीं, तारा को तो नींद आ गई मगर रम्भा की आंख बिल्कुल न लगी, रात भर घड़ियाल की आवाज गिना की और अपने जाने की तैयारी और बात सोचती रही । सवेरा होते ही चारपाई से उठी, तारा को भी जगाया हाथ मुंह धोकर बैठी और अपने भाई अर्जुनसिंह के आने की राह देखने लगी ॥

थोड़ी ही देर बाद अर्जुनसिंह भी पहुंचे, रम्भा को रोज से ज्यादे उदास देख बोले—"बहिन ! आज तुम ज्यादा उदास मालूम होती हो ! इसका सबब तो मैं जानता ही हूं क्यों पूछूं तौ भी कहता हूं कि सब्र करो घबड़ाओ मत देखो ईश्वर क्या करता है ॥"

रम्भा० । क्या करूं भैया अब तो मैं अपनी जान देने को

तैयार हो चुकी, पिता मानते ही नहीं, मां कुछ सुनती ही नहीं, तुम कुछ मदद करते ही नहीं फिर जी ही के क्या...(आंसू बहाती है) ॥

अर्जुन० । (अपने रूमाल से आंसू पोंछ कर) बहिन ! मैं भी तो कई दफे मना कर चुका हूं मगर लोभी पण्डितों के फेर में पड़ के कोई सुनता ही नहीं तो क्या करूं ? अब जो तुम कहो मैं करने को तैयार हूं अपने जीते जी किसी तरह की तकलीफ तुमको न होने दूंगा ॥

रम्भा० । क्या मेरा कहना तुम मानोगे ?

अर्जुन० । जरूर मानूंगा ॥

रम्भा० । अच्छा मुझे इन सभों से चुपचाप काशी पहुंचा दो मैं वहां विश्वनाथ के चरणों में अपना पातिव्रत निबाहूंगी और देखूंगी कि माई अन्नपूर्णा मेरी कुछ सुनती है या नहीं ॥

अर्जुन० । क्या हर्ज है चलो तुमको आज ही यहां से ले चलता हूं कहो तो और किसी को भी साथ लेता चलूं ॥

रम्भा० । तारा मेरे दुःख सुख की साथी होकर चलेगी और किसी को साथ लेना मुनासिब न होगा ॥

अर्जुन० । (तारा की तरफ देख कर) क्यों क्या तुम चलोगी ?

तारा० । जरूर चलूंगी ॥

अर्जुन० । अच्छा तो सवारी का क्या बन्दोबस्त किया जाय ?

रम्भा० । तुम जानते ही हो कि हमलोगों को घोड़े पर चढ़ने

का खूब मोहावरा है, फिर भागने के लिये इससे बढ़ कर और कौन सवारी होगी ?

अर्जुन० । अच्छा तो घोड़े ही का बन्दोबस्त हो जायगा अब मैं जाता हूं क्योंकि इसी वक्त से फिक्र करनी होगी ॥

तारा० । तुम्हारे पास नरेन्द्रसिंह की तस्वीर भी तो होगी ॥

अर्जुन० । हां है तो ॥

तारा० । मुझे दो ॥

अर्जुन० । अच्छा मेरे साथ आओ मैं तुम्हें दूं ॥

तारा० । (भौंहें मरोड़ कर) वाह ! मैं तुम्हारे साथ वहां मर्दों में चलूं !!

अर्जुन० । (हँस कर) अच्छा मैं अपने साथ लेता चलूंगा रास्ते में ले लेना ॥

तारा० । सो हो सकता है ॥

अर्जुन० । अच्छा तो मैं जाता हूं अब आधी रात को मुलाकात होगी ॥

अर्जुनसिंह वहां से रवाना हुए और अपने घर जाकर छिपे छिपे सफर की तैयारी करने लगे ॥

आठवां बयान।

शाम होते ही रम्भा और तारा भी अपनी अपनी तैयारी इस तरह करने लगीं कि किसी लौंडी तक को मालूम न हुआ, इसके बाद कुछ खा पीकर सोने के कमरे में जा अपने अपने पलङ्ग पर सो रहीं। नींद काहे को आती थी, यही सोच रही थीं कि अर्जुनसिंह आवें और हमलोग यहां से चलते बनें॥

आधी रात के बाद यकायक बाहर से किसी के पैर की चाप मालूम हुई, दोनों उसी तरफ़ देखने लगीं, इतने में अर्जुनसिंह सामने आ खड़े हुए। इनको देखते ही दोनों उठ बैठीं और रम्भा ने पूछा, "क्या आप तैयार हो आये?" इसके जवाब में अर्जुन-सिंह ने कहा, "हां सब दुरुस्त है अब देर मत करो॥"

रम्भा०। यहां आती समय पहरे वालों ने तो ज़रूर टोका होगा और जाती समय भी टोकेंगे॥

अर्जुन०। क्या पहरे वालों की इतनी मजाल हो गई कि मुझे आते जाते रोक टोक करें? हां जाने के बाद जिसका जी चाहे शिकायत करे। अच्छा अब देर न करो जल्दी चलो॥

रम्भा और तारा दोनों को अर्जुनसिंह साथ लेकर घर से बाहर निकले और पैदल मैदान की तरफ चले। थोड़ी दूर जाकर इन लोगों को एक पुराना बड़ का पेड़ मिला जिसके नीचे तीन साईस

कसे कसाये घोड़े लिये अर्जुनसिंह के आने की राह देख रहे थे॥

तीनों आदमी घोड़े पर सवार हुए। अर्जुनसिंह ने तीनों साईसों को कहा, "अब तुमलोग अपने अपने घर जाओ जब हम आवेंगे तब बुला लेंगे घर बैठे तुमलोगों के खाने को पहुंचा करेगा॥"

तीनों साईस सलाम कर बिदा हुए और इन लोगों ने पश्चिम का रास्ता पकड़ा॥

जब तक रात रही तीनों घोड़ा फेंके चले गये। जब आस्मान पर सुपेदी दिखाई देने लगी तब अर्जुनसिंह ने घोड़े की बाग रोकी और रम्भा की तरफ देख कर कहा, "बहिन! अब हम लोगों को यहां कुछ देर के लिये रुक जाना चाहिये, अन्दाज से मालूम होता है कि मुसाफिरों के टिकने का स्थान अर्थात् चट्टी (पड़ाव) अब बहुत करीब है मगर हमलोग आगे जाकर किसी दूसरी चट्टी में डेरा डालेंगे यहां न ठहरेंगे, इसलिये इसी जगह रुककर घोड़ों को ठण्ढा कर लेना चाहिये। तुम दोनों औरतों के बदन के लायक मर्दानी पोशाक भी मैं लेता आया हूं जो तुमलोगों के घोड़ों की जीन के साथ असबाब में पीछे की तरफ बंधी हुई है, मुनासिब है कि तुम दोनों भी अपनी मर्दानी सूरत बना लो॥"

अर्जुनसिंह की बात रम्भा और तारा ने भी पसन्द की और घोड़े से उतर पड़ीं। जीन खोल घोड़ों को ठण्ढा होने के लिये छोड़ा और खुद भी जनानी पोशाक उतार मर्दाने कपड़े पहिर कर तैयार हो गई॥

तीनों आदमी चारजामा बिछा कर पेड़ के नीचे बैठ गये। कुछ देर के बाद रम्भा का इशारा पा तारा ने अर्जुनसिंह से कहा, "आपने वादा किया था कि नरेन्द्रसिंह की तस्वीर दिखावेंगे॥"

अर्जुनसिंह ने कहा, "हां हां, मैं नरेन्द्रसिंह की तस्वीर लेता आया हूं लो देखो।" यह कह अपने जेब से तस्वीर निकाल तारा के हाथ में दे दी और आप घोड़ों को कसने लगे॥

तारा ने रम्भा के हाथ में तस्वीर देकर कहा, "देखो बहिन ऐसे खूबसूरत और दिलावर नरेन्द्रसिंह के बारे में लोगों ने कैसी कैसी गप्पें उड़ाई हैं॥"

तस्वीर देखते ही रम्भा की आंखें डबडबा आईं और जी बेचैन हो गया, अपने को बड़ी मुश्किल से सम्हाला और तस्वीर तारा के हाथ में देकर बोली, "देखा चाहिये इनकी बदौलत मेरी क्या गति होती है!!"

अर्जुनसिंह दो घोड़ों पर जीन कस चुके, जब अपने सवारी का घोड़ा कसने लगे तो यकायक कुछ देख कर घोड़ा भड़का और अर्जुनसिंह के हाथ से छूट मैदान की तरफ भागा, वे भी उसके पीछे दौड़े॥

रम्भा और तारा यह देख उठ खड़ी हुईं और उस तरफ देखने लगीं जिधर घोड़े के पीछे पीछे अर्जुनसिंह दौड़ गये थे। घोड़ा चक्कर लगा लगा कर दौड़ता और कभी खड़ा होकर पीछे की तरफ देखता जब अर्जुनसिंह उसके पास पहुंचने तो फिर

तेजी के साथ भागता था ॥

दिन बहुत चढ़ आया मगर वह घोड़ा अर्जुनसिंह के हाथ न लगा यहां तक कि देखते देखते वे दोनों की नजरों से गायब हो गये, आखिर घबड़ा कर रम्भा और तारा दोनों घोड़ों पर सवार हुईं और उस तरफ को चलीं जिधर घोड़े के पीछे अर्जुनसिंह गये थे मगर इनका मतलब सिद्ध न हुआ, दिन भर भूखे प्यासे दौड़ने पर भी अर्जुनसिंह से मुलाकात न हुई और दोनों एक बड़े भयानक मैदान में पहाड़ी के नीचे पहुंच कर रुक गईं ॥

लाचार दोनों औरतें घोड़ों से नीचे उतरीं और घोड़ों की पीठ खाली कर लम्बी बागडोर लगा पत्थर से अटका चरने के लिये छोड़ दिया और खुद एक चिकने पत्थर पर बैठ रोने और अफसोस करने लगीं ॥

रम्भा० । देखो बहिन ! बुरी किस्मत इसे कहते हैं ॥

तारा० । परमेश्वर की मरजी न मालूम कैसी है, इस वक्त हमलोग कैसी बिबस हो रही हैं ॥

रम्भा० । अर्जुनसिंह के हाथ अगर घोड़ा लग भी गया होगा तो वह उस टिकाने जाकर हमलोगों को न देख कितना घबड़ाये होंगे ॥

तारा० । अब हमलोगों का वहां तक पहुंचना मुश्किल है ॥

रम्भा० । मालूम ही नहीं कि घूमते फिरते कहां आ गये ! अब भूख के मारे जी बेचैन हो रहा है ॥

तारा०। मुझे विश्वास है कि जीन की खुर्जी में थोड़ा बहुत मेवा अर्जुनसिंह ने जरूर रखवा दिया होगा॥

रम्भा०। देखो तो कुछ है॥

तारा ने उठकर दोनों घोड़ों के जीन की तलाशी ली, लगभग दो सेर मेवा दोनों में पाया जिससे वह बहुत खुश हुई और पुकार कर रम्भा से कहा :—

"हम दोनों दुखियों के खाने लायक बल्कि चार पाँच दिन तक जान बचाने लायक मेवा इसमें है॥"

रंभा०। कहीं पानी मिले तो पहिले मुह हाथ धो लेना चाहिये॥

तारा०। इस पहाड़ की सब्जी की तरफ देख कर मैं समझती हूं कि इसके ऊपर पानी का चश्मा जरूर होगा॥

रम्भा०। अभी तो दिन भी बहुत है चलो पहाड़ी के ऊपर चढ़ चलें॥

रम्भा और तारा दोनों ने मेवा साथ लिया और पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगीं। थोड़ी दूर ऊपर जाकर पानी के कई सोते इनको मिले, एक झरने के पास बैठकर इन लोगों ने मुंह धोया और किफायत के साथ थोड़ा मेवा खा कर जी ठण्ढा किया और फिर पहाड़ के ऊपर चढ़ने लगीं यहां तक कि शाम होते होते चोटी पर जा पहुंचीं॥

पहाड़ के ऊपर कई खूबसूरत और घने जङ्गली पेड़ थे जो इस समय हवा के झोकों से हिल हिल कर झोंके खा रहे थे,

एक तरफ छोटा सा दालान भी बना हुआ था, शाम हो चुकी थी ये दोनों थकी हुई एक पत्थर पर बैठ चारों तरफ देखने लगीं॥

दक्खिन की तरफ एक खूबसूरत इमारत और उसके पास ही दाहिनी तरफ हटकर कोस भर की दूरी पर छोटा सा शहर भी दिखाई पड़ा॥

रम्भा ने कहा, "बहिन तारा! हमलोग इस शहर में चल के नरेन्द्र सिंह को जरूर ढूढेंगे, देखो लोगों ने उनके बारे में क्या क्या गप्पें उड़ाई थीं कि लङ्गड़े, लूले, काने और बड़े ही बद-सूरत हैं। अगर वैसे ही होते तो क्या था? मेरा सम्बन्ध तो उनसे हो ही चुका था, मेरे पति कहला ही चुके थे अस्तु मेरे लिये परमेश्वर वही हैं चाहे जैसे हों॥

तारा०। उन लोगों की जुबान में साँप डसे जिन्होंने नरेन्द्र-सिंह के बारे में ऐसा कहा था, मैं कह सकती हूं कि ऐसा खूब-सूरत और बहादुर तो दुनिया में न होगा। तुम बड़ी किस्मत-वर हो... ......

रम्भा०। आज की रात इस पहाड़ पर काट कर कल उस शहर में जरूर चलना चाहिये॥

तारा०। ऐसा ही करेंगे॥

रम्भा०। मैं समझती हूं कि मर्दानी सूरत के बदले हमलोग फकीरी हालत में रह कर अपने को इससे ज्यादे छिपा सकेंगे॥

तारा० इसमें तो कोई शक नहीं, कल उस शहर में

बाजार से कपड़े खरीद फकीरी ढङ्ग की पोशाक दुरुस्त करा लूंगी ॥

ये दोनों बैठी बातें कर रही थीं कि आस्मान में काली काली घटा घिर आई, चारों तरफ अंधेरा छा गया, पानी बरसने लगा, बिजली चमकने और गरजने लगी जिसकी डरावनी आवाज पहाड़ों से टक्कर खा खा कर दस गुनी हो इन दोनों बेचारियों के जी को दहलाने लगी, दोनों उठकर उस दालान में गईं जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं ॥

रात भर पानी बरसता रहा और ये दोनों उसी दालान में बैठी अपनी किस्मत की शिकायत करती रहीं, जब सवेरा हुआ पानी बरसना बन्द हुआ धूप निकल आई वे दोनों भी उठीं और सवेरे के जरूरी कामों से छुट्टी पा एक चश्मे में हाथ मुंह धो कुछ मेवा खा कर शहर की तरफ चलने की तैयारी कर दी। तारा ने कहा—"कुछ मालूम नहीं हमारे दोनों घोड़ों पर क्या गुजरी रात भर पानी में दुःख उठा कर मर गये या जीते हैं ॥"

रम्भा० । वे घोड़े अब वहां न होंगे, किसी पेड़ से तो वे बंधे नहीं थे जब बदन पर पानी पड़ा होगा किसी तरफ भाग गये होंगे, हम लोगों को भी अब घोड़ों की जरूरत नहीं है पैदल ही चलना ठीक होगा जहां मन में आया गये जहां चाहा पड़ रहे, मगर हां पहाड़ी के नीचे चल कर उन घोड़ों को जरूर देखना चाहिये अगर हों तो उनको खोल देना उचित होगा ॥

तारा० । मेरी भी यही राय है ॥

वे दोनों पहाड़ी के नीचे उतरीं मगर घोड़ों को वहां न पाया, रम्भा ने कहा, "क्यों सखी मैं कहती थी न कि दोनों घोड़े भाग गये होंगे। चलो अच्छा हुआ बखेड़ा छूटा अब यहां ठहरने की कोई जरूरत नहीं॥"

इसके बाद वे दोनों शहर की तरफ रवाना हुईं॥

हाय! आज तक जो बड़े लाड़ और प्यार से पली थी उसको धर्म के कठिन रास्ते का दुःख भोगना पड़ा। अभी तक जिसको जमाने की गर्म सर्द हवा छू नहीं गई थी उसको आंधी और लू के झपेटे बर्दाश्त करने पड़े। चन्द्रमा की कड़ी चांदनी से जिसके स्वर में दर्द होता था उसे कड़ी धूप से माखन से भी कोमल अपने बदन को पिघलाना पड़ा। जो कभी दस कदम भी जबर्दस्ती से नहीं चलाई गई थी आज वह कोसों मिट्टी फांकने के लिये मजबूर की गई। जो भोजन करने के लिये दिन भर में दस दफे पूछी जाती थी उसे कोई मुट्ठी भर अन्न देने वाला भी न रहा। जिसकी आंख डबडबाई हुई देखकर लोगों का जी बेचैन हो जाता था उसके आंसू पोंछने वाला आज कोई नहीं! जो हो नरेन्द्रसिंह की बदौलत रम्भा को आज यह सब दुःख भोगने पड़े। धन्य है बिचारी तारा को जो ऐसे समय में भी अपनी प्यारी सखी का साथ नहीं छोड़ती। यह सब प्रेम की बात है नहीं तो किसे कौन पूछता है॥

थोड़ी थोड़ी दूर पर धूप से घबड़ा कर किसी पेड़ के नीचे

ठहरती, दम लेकर चलती, आंसुओं से अपने चेहरे को तर करती दम दम भर पर हाय कहके जी के बुखार को निकालती हुई दिन ढलते ढलते अपनी सखी तारा को साथ लिये हुए रम्भा उस शहर के पास जा पहुंची जिसे पहाड़ी के ऊपर से देखा था॥

शहर की बाहरी हद्द पर एक सुन्दर पहाड़ी थी जिसके नीचे हाथों में लट्ठ लिये बदमाशी ठाठ के कई आदमी दिखाई पड़ें, तारा ने चाहा कि किसी से इस शहर का नाम पूछे मगर वे सब के सब बिना कहे इन दोनों के पास पहुंचे और इन दोनों से तरह तरह की बातें पूछने लगे॥

कोई कहता है क्यों साहब! आप किसके यहां जायेंगे? हम लोग गयावाल के नौकर हैं यहां आपका पण्डा कौन है? कोई कहता है लालजी भैया के हम आदमी हैं हमारे साथ चलिये। कोई आपुस ही में चिढ़ा कर कहता है—"अजी यह पुरबिये हैं हमारे जजमान हैं चलो हटो तुम लोग झूठे बखेड़ा मचाये हुए हो।" कोई इन दोनों के बहुत पास आके कहता है आप मेरे यहां चलिये वहां टिकने का बड़ा आराम है और हम यात्रा पिण्डा भी बहुत अच्छी तरह करा देंगे, आइये यह रामसिला है पहिले इसी का दर्शन करना चाहिये नहीं तो यात्रा सुफल न होगी। कोई कहता है अभी तो यह आपही लड़के हैं पिण्डा क्या देंगे॥

इसी तरह इन लोगों ने चारों तरफ से रम्भा और तारा को घेर लिया और अपनी अपनी बकवाद करने लगे। तारा ने उन

सभों से कहा कि हमलोग यात्री नहीं हैं सौदागर के लड़के है मगर वे लोग कब मानने वाले थे, इन दोनों को यहां तक तङ्ग किया कि दोनों की आंखों में आंसू डबडबा आया और तारा ने झुंझला कर कहा, "तुमलोग बड़े शैतान हो बात नहीं मानते और बेफायदा तङ्ग कर रहे हो। हम लोग मुसल्मान होकर पिंडा सिरद्दा क्यों देने लगे ?"

मुसल्मान का नाम सुन कर वे लोग पीछे हटे और बेहूदी बातों के साथ आवाजा कसने लगे। ये दोनों आगे बढ़ीं तब तारा ने कहा, "देखो बहिन ! ये लोग यात्रियों को कितना दिक करते हैं ! अगर हमलोग अपने को मुसल्मान न बनाते तो इन लोगों के हाथ से बहुत तङ्ग होते, तिस पर भी देखो अब ये लोग गालियां देने पर उतारू हुए हैं।"

रम्भा ने कहा, "चुपचाप चली चलो, नालायकों को बकने दो, अब मालूम हुआ कि यह गयाजी है, ताज्जुब नहीं कि यहां नरेन्द्रसिंह से मुलाकात हो जाय।" इतना कह रम्भा ने फिर कर देखा तो उन्हीं शैतानों में से दो आदमियों को पीछे पीछे आते पाया। यह देख रम्भा बहुत घबड़ाई और तारा से बोली, "देखो अभी दुष्ट लोग पीछा किये चले ही आते हैं, बड़ी मुश्किल हुई, इन लोगों के मारे कहीं यह भेद खुल न जाय कि हमलोग औरत हैं और मर्दानी पोशाक केवल अपने को छिपाने के लिये पहिरे हैं मगर ऐसा हुआ तो इज्जत पर आ बनेगी और अपने

हाथों अपना गला काटना पड़ेगा ॥"

तारा बोली, "खैर कदम बढ़ाये चलो—राम करे सो होय—कहीं सराय में चल कर डेरा डालेंगे फिर देखा जायगा ॥"

पहर भर दिन बाकी था जब ये दोनों शहर में घुसकर खोजती फिरती एक सराय के दर्वाजे पर पहुंचीं। भटियारी आगे आकर इन लोगों को खातिरदारी के साथ सराय में ले गई, एक अच्छी साफ कोठड़ी इन दोनों को रहने के लिये दी और चारपाई तथा बिछौने का इन्तजाम करके पूछा, "अगर कुछ बाजार से लाने की जरूरत हो तो ले आऊं।" तारा ने कहा, "नहीं इस वक्त किसी चीज की जरूरत नहीं है।" यह सुन भटियारी वहां से हट दूसरे मुसाफिर की टोह में सराय के बाहर चली गई मगर इन दोनों के पास कोई असबाब न देख कर हैरान थी ॥

गयावाल पण्डे के दो आदमी जो रम्भा और तारा के पीछे पीछे आ रहे थे इन दोनों को सराय के अन्दर जाते देख बाहर फाटक पर अटक गये। जब भटियारी इन दोनों को डेरा दिलवा कर फिर सराय के फाटक पर गई तब वे दोनों आदमी भटियारी से कुछ धीरे धीरे बातचीत करने लगे, इसके बाद अपने कमर से कुछ निकाल कर भटियारी के हाथ में दिया जिसे लेकर उसने कहा, 'आप बेपरवाह रहिये मैं बन्दोबस्त कर दूंगी ॥

नौवां बयान ।

रम्भा और तारा ने रात उदासी और तकलीफ के साथ बिताई, सबेरा होते ही बुढ़िया भठियारी उन दोनों के पास गई और सामने बैठ कर बातचीत करने लगी :—

भठियारी० । कहिये, रात को किसी तरह की तकलीफ तो आप लोगों को नहीं हुई ?

तारा० । नहीं, हमलोग बड़े आराम से रहे ॥

भठि० । यहां आराम तो हर तरह का है मगर आपको तकलीफ जरूर भई होगी क्योंकि मर्द का भेष बन कर अपने को छिपाने के तरद्दुद में आप लोगों ने कुछ खाने पीने का भी इन्तजाम नहीं किया, न बाजार ही से जाकर कुछ सौदा लाये ॥

तारा० । (ताज्जुब और घबड़ाहट से रम्भा की तरफ देख कर) लो सुनो ! बीबी भठियारी को हम लोगों पर शक है !!

भठि० । (हंस कर) अभी आप इस लायक नहीं हुई कि मुझे धोखा दें, इसी शैतानी में मैंने जन्म बिताया, अपने लड़कपन और जवानी के समय में मैंने कैसे कैसे ढङ्ग रचे कि अच्छे अच्छे चालाकों की नानी मर गई, अभी आप लोगों की उम्र ही क्या है ?

तारा डरकर जी में सोचने लगी, "यह बुढ़िया तो हमलोगों को पहिचान गई ऐसा न हो कोई आफत लावे, यह ख्याल करके

अपने कमर से एक अशर्फी निकाल उस भठियारी के हाथ में रखकर बोली, "माई ! तुम्हें इन सब बातों से क्या मतलब है हमलोग किसी तरह मुसीबत के दिन काट रहे हैं, दो चार रोज इस शहर में भी रहकर कहीं का रास्ता लेंगे, इज्जतदार हैं, आवारे और बदमाश नहीं हैं तुमको चाहिये कि हर तरह से हमको छिपाओ और हमारी इज्जत का ध्यान रक्खो ॥"

बुढ़िया अशर्फी पाकर खुश हो गई और बोली, "नहीं नहीं, भला यह कैसे हो सकता है कि हमारे सबब से आप लोगों को किसी तरह की तकलीफ हो, क्या मजाल कि किसी को भेद मालूम हो जाय ॥"

इतनी बातें हो ही रही थीं कि सराय के अन्दर घोड़े पर चढ़ा हुआ एक लड़का बीस बाईस वर्ष के सिन का खूबसूरत और बेशकीमत भड़कीली पोशाक पहिरे आता दिखाई पड़ा जिसे देखते ही भठियारी उठ खड़ी हुई । रम्भा और तारा की भी निगाह उसपर पड़ी, देखा कि हाथ में लम्बे लम्बे लठ लिये कई आदमी भी उसके साथ हैं जिनमें वे दोनों आदमी भी हैं जो कल रम्भा और तारा के पीछे पीछे आये थे और भठियारी से बातचीत करके उसके हाथ में कुछ दे गये थे ॥

यह देखते ही रम्भा और तारा का माथा ठनका, तरह तरह के शक उनके दिल में पैदा होने लगे और डरके मारे कलेजा कांपने लगा, वह सवार बराबर वहां तक चला आया जहां रम्भा

और तारा कोठरी के दरवाजे पर बैठी थीं ॥

वह सवार इन दोनों की तरफ गौर से देखकर भटियारी से बोला, "मुझे टिकने के लिये कोई जगह दो ॥"

भटि० । आपके रहने लायक इस सराय में जगह कहां ? चलिये उम्दा निराला मकान आपके रहने के लिये दूं ॥

भटियारी उनको साथ ले सराय के बाहर चली गई और घण्टे भर तक न आई ॥

जब भटियारी फिर सराय में आई तो सीधे रमा और तारा के पास चली गई और बैठ कर कहने लगी, "यह बहुत बड़े आदमी हैं, साल में दो तीन दफे हमारे यहां आ कर टिका करते हैं, अमीरों और रईसों के टिकने के लिये मैंने कई मकान भी बनवा रक्खे हैं जिनमें सजा हुआ कमरा और हर तरह का सामान भी दुरुस्त रहता है, उन्हीं मकानों में से किसी मकान में इन्हें टिकाया करती हूं, यह जब तक रहते हैं एक अशर्फी रोज देते हैं । तुम भी किसी आली खानदान की लड़की मालूम होती हो अगर कहो तो तुम्हें भी एक अलग मकान टिकने के लिये दूं और बाजार से सौदा वगैरह लाने के लिये किसी हिन्दू मजदूरनी का भी बन्दोबस्त कर दूं, क्योंकि इस जगह आप लोगों को हर तरह की तकलीफ होगी और भेद खुलने का खौफ बराबर बना रहेगा, आखिर सवेरे सवेरे आपने मुझे एक अशर्फी दी है उसी की बदौलत एक और अमीर का भी डेरा मेरे यहां आया, मुझेभी

चाहिये कि जहां तक बने आप लोगों के आराम के साथ रहने का बन्दोबस्त करूं॥"

तारा ने कहा, "इस सवार के पियादों में कई आदमी ऐसे हैं जिन्हें मैं पहिचानती हूं क्योंकि कल शहर के बाहर पहाड़ी से यहां तक वे लोग मेरे पीछे पीछे आये थे॥"

भ.ठि०। हां, वे गयावाल पण्डों के नौकर हैं, उनका काम ही है कि शहर के बाहर पहाड़ी के नीचे जिसका नाम रामसिला है बैठे रहते हैं, जब कोई मुसाफिर आता है तब उसे अपने मालिक का जजमान बनाने के लिये कोशिश करते हैं। इन्हें अपना जजमान बना आज इन्हीं के साथ वे लोग आये होंगे जिन्हें कल आपने देखा था॥

तारा०। खैर अगर हमलोगों के लायक कोई उम्दा मकान हो तो दो॥

यह सुन भठियारी वहां से उठ सराय के बाहर चली गई और घड़ी भर के बाद फिर लौट आकर तारा से बोली, "चलिये सब दुरुस्त कर आई हूं॥"

तारा और रम्भा को साथ ले भठियारी सराय के बाहर हुई और थोड़ी दूर जाकर एक सुनसान गली में घुसी। कई मकान आगे बढ़ एक छोटे से मकान के बन्द दर्वाजे पर खड़ी होगई और चाभी से उसका ताला खोला जो उसके आंचल के साथ बंधी हुई थी॥

दोनों को लिये हुए मकान के अन्दर गई, यह मकान अंदर से भी बहुत साफ और सुथरा था, कुल चीजें जरूरत की उसमे मौजूद थीं, एक कमरे में कई शीशे लगे हुए थे, जमीन पर फर्श और उसके ऊपर दो चारपाई बिछी हुई थी जिसके बिछौने की चादर सब्ज रेशम की डोरियों से खूब कसी थी ॥

रम्भा और तारा को ज्यादे चीजों की जरूरत न थी मगर इस मकान को देखकर खुश हुईं। तारा ने भठियारी से कहा कि मकान तो तुमने बहुत अच्छा दिया अब एक हिन्दू मजदूरनी का बन्दोबस्त कर दो तो पानी वगैरह का भी इन्तजाम हो जाय और दो चार जरूरी बर्तन भी बाजार से ले आवे ॥

भठियारी दौड़ी हुई गई और थोड़ी ही देर में हिन्दू मजदूरनी भी ले आई जो गले में तुलसी की कण्ठी पहिने हुए थी ॥

भठियारी चली गई, जिन जिन चीजों की जरूरत थी सब मजदूरनी की मारफत बाजार से मँगवा ली गईं। इस मकान में कूंआं न था इसलिये पानी भी बाहर ही से मँगवाना पड़ा ॥

दोनों ने स्नान किया, खाने को बना कर भोजन करने बाद दर्वाजा मकान का बन्द कर पलङ्ग पर जा लेटीं, नींद आगई, जब थोड़ा दिन बाकी रहा तब उठीं। रम्भा ने तारा से कहा, "बहिन! आज रात को मर्दाने भेस में घूम कर नरेन्द्रसिंह की टोह लेनी चाहिये।" तारा ने कहा, "जरूर आज रात को हम लोग घूमेंगे॥"

हाथ मुंह धोने के लिये पानी की जरूरत पड़ी, मजदूरनी को पुकारा वह मौजूद न थी। तारा ने रम्भा से कहा, "देखो हमने उस नालायक से कह दिया था कि विना पूछे बाहर न जाइयो मगर वह चली गई, मैं पहिले जा कर दरवाजा बन्द कर आऊँ॥"

यह कह तारा नीचे उतरी, दरवाजा खुला हुआ था, दर्वाजे के बाहर लट्ठ लिये हुए कई आदमी दिखाई पड़े जिनमें वे दोनों भी थे जो रामसिला पहाड़ी से रम्भा और तारा के पीछे पीछे आये थे और दूसरी दफे सवार के साथ साथ सराय में दिखाई पड़े थे॥

तारा इन सभों को दर्वाजे पर देख कर घबड़ा गई और कई तरह की बातें सोचने लगी, अन्दर से दर्वाजा बन्द करना चाहा मगर न हो सका क्योंकि वह जञ्जीर टूटी हुई थी जिससे दर्वाजा पहिली मर्तबे बन्द किया था, अब वह और भी घबड़ाई इतने मे दर्वाजे के बाहर बैठे हुए कई आदमियों में से एक ने कुछ हंस कर कहा, "अब यह दर्वाजा भीतर से नहीं बन्द हो सकता॥"

यह सुन तारा के होश जाते रहे, दौड़ी हुई ऊपर आई और रम्भा से बोली, "लो बहिन! गजब हो गया, इज्जत बचने की कोई सूरत नजर नहीं आती, हरामजादी भठियारी ने पूरा धोखा दिया अब हम लोगों को चाहिये कि अपने को कैदी समझें और जान से हाथ धो बैठें॥"

रम्भा ने घबड़ा कर पूछा, "क्यों क्यों क्या हुआ?" इसके जबाव में घबड़ाई हुई तारा ने जल्दी से सब हाल कहा जिसे सुन रम्भा का कलेजा धक धक करने लगा और दोनों आंखों से आंसुओं की बूंदें टपाटप गिरने लगीं। तारा ने फिर कहा—

"बहिन! अब रोने से कोई काम न चलेगा जान बचाने की फिक्र करनी चाहिये॥"

रम्भा०। जान बचाने की फिक्र क्या की जाय?

तारा०। जहां तक हो खूब चिल्लाना चाहिये जिसमें इधर उधर के बहुत से आदमी इकट्ठे हो जायं और हम लोगों को अपना दुःख कहने का मौका मिले॥

रम्भा०। यह मकान ऐसी गली में है कि सड़क तक आवाज भी न जायगी॥

तारा०। तो भी कई पड़ोस के आदमी इकट्ठे हो जायंगे॥

रम्भा०। दर्वाजा तो इस लायक उन्होंने नहीं रक्खा कि बन्द किया जाय मगर सीढ़ी की किवाड़ियों का क्या बिगड़ा है—इसे तो बन्द कर दो फिर रोने चिल्लाने की सोचना॥

"हां यह तो मुझे याद ही नहीं रहा।" यह कहती हुई तारा दौड़ गई और सीढ़ी के किवाड़ खूब मजबूती से बन्द कर आई इतने ही में धमधमाते हुए कई आदमी नीचे के चौक (आँगन) में आ पहुंचे। तारा ने झांक कर देखा तो वही गयावाल पण्डा जिसे सराय में देखा था और कई आदमियों को जिनमें वे दोनों भी थे जिन्होंने रामसिला पहाड़ी से रम्भा और तारा का पीछा किया था साथ लिये आ पहुंचा है और सभों को नीचे छोड़ आप ऊपर चला आता है॥

सीढ़ी की किवाड़ी बन्द थी इसलिये वह यकायक इन लोगों के पास न पहुंच सका और जंजीर खोलने के लिये आरजू मिन्नत करने लगा। यह देख रम्भा और तारा मकान की छत पर चढ़ गईं। इस मकान के साथही सटा हुआ दूसरा मकान देखा जिसकी छत बहुत नीची न थी, यह दोनों उसी मकान में कूद पड़ीं॥

दसवां बयान।

दो पहर का समय छोटे से जङ्गल में एक घने पेड़ के नीचे आठ दस आदमी बैठे आपुस में बातचीत कर रहे हैं॥

ये सब कौन हैं? इसके लिये साफ ही कह देना ठीक है कि ये लोग वे ही मल्लाह हैं जिनसे नरेन्द्रसिंह से बातचीत हुई थी, जब वे शेहनी गुलाब और बहादुरसिंह को छोटी किश्ती के पास छोड़ नाव किराये करने गये थे। इन लोगों में एक ज्यादे बुड्ढा है जिसे नरेन्द्रसिंह ने पहिले नहीं देखा था। शायद उन सभों का सर्दार हो॥

एक०। बड़ी भूल तो यह हो गई कि नरेन्द्रसिंह को न पकड़ लिया॥

दूसरा०। हां, अगर उनको गिरफ्तार कर लेते तो बस चारो को ठिकाने पहुंचाते, फिर कोई पूछने व पता लगाने वाला भी न रहता, अब तो एक चिन्ता सी लगी रह गई॥

बूढ़ा०। अजी ईश्वर ने अच्छा किया जो तुम लोगों को नरेन्द्र-सिंह के पकड़ने का हौसला उस समय न दिया, नहीं तो ऐसी हालत में जब कि हमारे साथी को भुलावा दे कर बहादुरसिंह ले गया है, बड़ी मुश्किल होती, हमलोगों को खौफ तो इस समय भी बहुत कुछ है क्योंकि नरेन्द्रसिंह का बाप बड़ा ही जालिम

है, भोला और बहादुरसिंह जरूर उससे जा कर सब हाल कहेंगे और हम लोगों का पता देंगे ॥

चौथा० । इसमें तो कोई शक नहीं,फिर क्या करना चाहिये?

पांचवां० । हमलोगों को ते जमा पूंजी से मतलब था, सो दोनें औरतों के गहने उतार ही लिये । इतनी भारी रकम जन्म से आज तक हाथ न लगी थी, अब उन दोनें को जमीन के अन्दर पहुंचाइये, बस होगया ॥

बूढ़ा० । न मालूम तुमलोगों की बुद्धि कहां चरने चली गई! दोनें औरतें को मार कर क्या अपनी जान बचा लोगे ? नरेन्द्र-सिंह तुमलोगों को छोड़ देगा ? नहीं जानते कि उनके यहां कैसे कैसे बेढब पता लगाने वाले जासूस मैाजूद हैं ? नरेन्द्रसिंह को उतने गहनों की परवाह नहीं है जो हमलोगोंने उन दोनें औरतें के उतार लिये हैं, मगर उनकी जानों पर आफत आते ही हम लोगों की जड़ बुनियाद तक बाकी न रहैगी इसे खूब समझ लेना ॥

पहिला० । फिर क्या किया जाय ?

बूढ़ा० । बस इस वक्त यह मुनासिब है कि वे दोनें औरतें छोड़ दी जायँ, घूमती फिरती आप ही नरेन्द्रसिंह को मिल जायँगी, उनके मिलने पर फिर हम लोगों की इतनी खोज न करेंगे इसके साथ ही वह मकान भी हम लोगों को खाली कर देना चाहिये,उसे अब उजडा ही हुआ समझो ॥

तीसरा० । हमलोग तो हुक्म के मुताबिक काम करेंगे नफा नुक्सान आप समझ लीजिये ॥

बूढा० । हम खूब सोच चुके, इस काम में अब देर करना अच्छा नहीं है ॥

इसके बाद सब उठ कर एक तरफ को रवाने हुए ॥

ग्यारहवां बयान ।

मल्लाहों का पता न लगने से मोहनी और गुलाब के गम में नरेन्द्रसिंह वेहोश होकर गिर पड़े, घण्टे भर के बाद उन्हें होश आया, उठकर तलवार म्यान में की और नाव के नीचे उतरे, मगर मोहनी, गुलाब और वहादुरसिंह के लिये तबीयत बेचैन थी, वहां से धीरे धीरे एक तरफ रवाना हुए मगर यह नहीं जानते थे कि किस तरफ जा रहे हैं आगे जङ्गल मिलेगा या शहर ॥

कई दिनों के बाद जङ्गली फलों से गुजारा करते हुए एक घने जङ्गल के किनारे पहुंचे, बिना कुछ खयाल किये यह उस जङ्गल में घुसे। जैसे जैसे यह आगे जाते थे जङ्गल रमनीक और सुहावना मिलता था, यहां तक कि शाम होते २ यह ऐसे ठिकाने पहुंचे जहां के जङ्गल को लम्बा चौड़ा बाग ही कहना मुनासिब है, साखू, आसन, तेंद, पारजात वगैरह खुदरौ (आपसे आप उगने वाले) दरख्तों के अलावे कायदे से हाथ के लगाये हुए खुशबूदार फूलों के पेड़ भी दिखाई पड़े और जमीन भी वहां की साफ और सुथरी थी । दाहिनी तरफ कुछ दूर पर पेड़ों की झिलमिलाहट में एक सुपेद इमारत भी दिखाई पड़ी ॥

उस जगह पहुंच कर हमारे नरेन्द्रसिंह अड़ गये और कुछ

गौर करने लगे। इतने ही में इनकी निगाह बाईं तरफ जा पड़ी, देखा कि कुछ दूर पर कई कमसिन औरतें खूबसूरत लिबास पहिने, अठखेलियां करतीं इधर उधर टहल रही हैं, कभी धीरे धीरे चलती हैं, कभी दौड़ कर एक दूसरे को पकड़ती या धक्का देती हैं, कभी कोई सीटी या ताली बजा कर खूब जोर से हंस देती है॥

ऐसे दुःख की अवस्था में भी नरेन्द्रसिंह का जी उस तरफ जा फंसा, गौर के साथ देखने लगे, चाहा कि उधर न जायँ मगर जी न माना, धीरे धीरे उसी तरफ बढ़े। जब उन लोगों के पास पहुंचे रुक गये। इतने में उनमें से कई औरतों की निगाह नरेन्द्रसिंह पर जा पड़ी, सकपका कर इनकी तरफ देखने लगीं यहां तक कि कुल औरतों ने इन्हें ताज्जुब की निगाह से देखा और आपुस में कुछ इशारे से बातचीत करने लगीं, जिससे नरेन्द्रसिंह को भी मालूम हो गया कि उनके आने पर उन सभों को आश्चर्य है॥

इन सभों में से एक औरत चाल ढाल, पोशाक, जेवर और खूबसूरती के हिसाब सभों में सर्दार मालूम होती थी यों तो सभी चञ्चल और खूबसूरत थीं मगर उसके मुकाबिले की एक भी न थी जिसने उदास और गमगीन नरेन्द्रसिंह का दिल भी अपनी तरफ खैंच लिया अर्थात् नरेन्द्रसिंह को धोखा हुआ कि यह मोहनी है॥

मोहनी का खयाल बंधते ही नरेन्द्रसिंह उसकी तरफ लपके जिससे उन औरतों को और भी आश्चर्य हुआ। इन्होंने जल्दी से पास पहुंच कर पूछा, "क्यों मोहनी ! तुम यहां कैसे पहुंचीं ? मैं कब से तुम्हारी खोज में परेशान हो रहा हूं ॥"

उस औरत ने इनकी बात का कोई जवाब न दिया और अपनी हमजोलियों की तरफ देखकर सिर नीचा कर लिया। नरेन्द्र-सिंह ने फिर पूछा, "क्यों चुप क्यों हो ?"

वह फिर भी कुछ न बोली हां आंखों से आंसू की बूंदें टपा-टप गिराने लगी ॥

ऐसी दशा देख नरेन्द्रसिंह और भी बेचैन होगये और बोले-"क्या सबब है जो तुम अपना हाल कुछ नहीं कहतीं और रो रही हो, तुम्हारी वह सूरत नहीं रही, चेहरे में भी फर्क पड़ गया, मालूम होता है बर्षों बाद मुलाकात हुई है, मारे गम के तुम्हारी जवानी भी तुमसे रुख़ होने लगी। मैं तो समझता था मुझसे मिल कर तुम खुश होगी मगर तुम्हें रोते देख जी और बेचैन होता है, कहो गुलाब तो अच्छी तरह है वह तुम लोगों के साथ दिखाई नहीं देती, कहां है ?"

गुलाब का नाम सुनकर वह और भी रोने लगी बल्कि उसकी सहेलियों की भी आंखें डबडबा आईं जिसे देख नरेन्द्रसिंह को विश्वास हो गया कि जरूर गुलाब किसी आफत में फँस गई या जान ही से गुजर गई"।

नरेन्द्रसिंह के कई मर्तबे पूछने और जिद्द करने पर वह अपने आँचल से आँसू पोंछ कर बोली :—

सब कुशल है, गुलाब भी अच्छी तरह से है, बाकी हाल मैं इस समय न कहूंगी, जल्दी क्या है आप भी थके मांदे आये हैं चलिये मकान में आराम में कीजिये, निश्चिन्ती में जो कुछ कहना है कहूंगी, ज़रा आप इसी जगह ठहरिये मैं अपनी सखियों को एक काम सौंप लूं तब आपके साथ चलूं ॥

इतना कह नरेन्द्रसिंह को उसी जगह छोड़ इशारे से अपनी सखियों को बुलाकर किनारे चली गई और आधी घड़ी तक आपुस में कुछ बातें करती रही इसके बाद फिर नरेन्द्रसिंह के पास आई और बोली, "चलिये मकान में क्योंकि अब अंधेरा हो जाने से यहां ठहरने का भी मौका नहीं है ॥"

नरेन्द्रसिंह को साथ लिये हुए उसी मकान में गई जिसे उन्होंने यहां आ कर कुछ दूर पेड़ों की आड़ में चमकता हुआ देखा था ॥

इस मकान के दर्वाजे पर कई सिपाही नङ्गी तलवार लिये पहरा दे रहे थे जो एक नये आदमी के साथ अपने मालिक को आते देख उठ खड़े हुए। नरेन्द्रसिंह का हाथ पकड़े हुए मोहनी मकान के अन्दर गई, पीछे उसकी सखियां भी पहुंचीं ॥

फाटक के अन्दर जाकर एक लम्बे चौड़े बाग में पहुंचे जिसकी रविशें निहायत खूबसूरती के साथ बनाई हुई थीं, पहाड़ी

और जङ्गली फूल पत्तियों के इलावे खुशबूदार फूलों के पेड़ भी बेशुमार लगे हुए थे जिनकी खुशबू से तमाम बाग गमक रहा था, सामने ही एक लम्बा चौड़ा दो मञ्जिला मकान बना हुआ नजर आया ॥

नरेन्द्रसिंह का हाथ पकड़े हुए उस मकान के ऊपर वाले खण्ड में ले गई और एक सजे हुए कमरे में ले जाकर बैठाया ॥

नरेन्द्रसिंह को इस वक्त बड़ीही खुशी थी, मगर साथ ही उसके गुलाब को देखे बिना जी बेचैन था, बैठतेही पूछा, "क्यों मोहनी ! गुलाब कहां है ? उसे जल्द बुलाओ मैं देखूंगा ॥"

मोहनी० । आज आप उसे नहीं देख सकते ॥

नरेन्द्र० । क्यों ?

मोहनी० । इसका सबब भी आप से कहूंगी ॥

नरेन्द्र० । अच्छा यह तो बताओ कि तुम्हारी सूरत ऐसी क्यों हो गई ? मालूम होता है कि सात आठ वर्ष के बाद तुम्हें देखता हूं ॥

मोह० । (ऊंची सांस लेकर) एक तो तुम्हारी जुदाई, दूसरे बहिन के गम ने मेरी यह हालत कर दी ॥

नरेन्द्र० । क्या गुलाब के सिवाय और भी तुम्हारी कोई बहिन थी ?

मोहनी० । जी नहीं ॥

नरेन्द्र० फिर किसका गम हुआ ?

मोहनी०। उसी गुलाब का ॥

नरेन्द्र०। (चौंककर) गुलाब को क्या हुआ, कहां गई ?

मोहनी०। (आंसू गिरा कर) बैकुण्ठ चली गई ॥

गुलाब के मरने का हाल सुन नरेन्द्रसिंह की अजब हालत हो गई बहुत देर तक रोते रहे ॥

नरेन्द्र०। अफसोस ! अभी तक तुम्हारा हाल भी न मालूम हुआ कि तुम कौन हो और किस सबब से तुम्हारी वह दशा हुई थी ॥

मोहनी०। क्या इतने दिन अलग रहकर भी आपको मेरा हाल मालूम न हुआ ?

नरेन्द्र०। कुछ नहीं ॥

मोहनी०। अच्छा तो मैं जरूर अपना हाल कहूंगी ॥

नरेन्द्र०। भला इतना तो बता दो कि उस किश्ती पर से तुम लोग कहां गायब हो गईं और बहादुरसिंह कहां चला गया ?

मोहनी०। इसका हाल भी अपने हाल के साथ कहूंगी, इस समय आप कुछ भोजन करके आराम कीजिये क्योंकि आपके चेहरे से थकावट और सुस्ती बहुत मालूम होती है ॥

नरेन्द्र०। तुम्हारे मिलने ही से थकावट और सुस्ती बिल्कुल जाती रही, मगर अफसोस ! बेचारी गुलाब......

इतना कह कर फिर रोने लगे, मोहनी ने बहुत कुछ समझाया और कुछ खाने के लिये जिद् किया मगर नरेन्द्रसिंह ने

कुछ न सुना लाचार उनको चारपाई पर लिटा और उनसे बिदा हो नीचे उतर आई और एक दूसरे कमरे में गई जहां उसकी सखियां बैठी उसकी राह देख रही थीं और शराब से भरी हुई कई बोतलें उस जगह रक्खी हुई थीं जिनमें से थोड़ा थोड़ा गिलास में डाल डाल कर वे सब पी रही थीं। मोहनी को आते देख उठ खड़ी हुई और हँस कर बोलीं, "मुबारक हो ईश्वर ने तेरे लिये क्या खूबसूरत जवान भेज दिया॥"

मोहनी०। (हँस कर) देखिये जब रह जायँ तब तो॥

एक०। तेरे पंजे में फँसा हुआ कब निकल सकता है हां तू खुद निकाल बाहर करे तो दूसरी बात है॥

मोहनी०। नहीं नहीं, इनके साथ कभी वैसा न करूंगी जैसा दूसरों के साथ किया है क्योंकि ऐसा खूबसूरत और बहादुर जवान अभी तक मुझे कोई भी नहीं मिला था और मालूम होता है यह जरूर किसी राजा का लड़का है॥

एक०। इसमें तो कोई शक नहीं, आओ बैठो कहो क्या क्या बातचीत हुई?

मोहनी०। इस वक्त कोई विशेष बातचीत तो नहीं हुई, सिर्फ गुलाब का हाल पूछा सो मैंने कह दिया कि मर गई यह सुन बहुत रोये पीटे फिर पूछा कि तुम अपना हाल बताओ तुम्हारी वह दशा कैसे भई थी किश्ती पर से कहां चली गई और बहादुरसिंह कहां गया। इसका जवाब क्या देती? मुझे कुछ मालूम

तो था ही नहीं, न मैं बहादुरसिंह को जानती थी कि वह कौन्
बला है, आखिर यह कह के टाल दिया कि कल कहूंगी ॥

दूसरी० । उनको यह पूरा विश्वास होगया कि मोहनी तुम्
ही हो ॥

तीसरी० । इनकी शक्क सूरत भी तो मोहनी की सी है, फर्क
इतना ही है कि उससे यह उम्र में सात वर्ष बड़ी हैं ॥

मोहनी० । अब मुझे भी फिक्र है कि कल अपना हाल क्या
कहूंगी ॥

एक० । पेड़ से लटकी हुई मोहनी और जमीन में गड़ी हुई
गुलाब की जान जरूर इन्होंने बचाई है या इनसे उन दोनों की
किसी तरह मुलाकात हो गई है ॥

दूसरी० । जरूर ऐसा ही हुआ है । क्या हुआ जो जी में आवे
बनाकर अपना हाल कह देना ॥

तीसरी० । अगर मोहनी ने पहिले अपना हाल कुछ कहा
हो तब ?

मोहनी० । नहीं, मोहनी ने अपना हाल कुछ नहीं कहा, क्योंकि
बात ही बात में यही दरियाफ्त करने के लिये मैंने पूछा था कि
मुझ से जुदा हो कर भी मेरा हाल तुमको नहीं मालूम हुआ ?
इसके जवाब में वे बोले कि "कुछ भी नहीं ।" इलावे इसके
पहिले ही उन्होंने पूछा था कि मुझे अभी तक यह नहीं मालूम
हुआ कि तुम कौन हो, इन सब बातों को खयाल करके मैं समझ

झती हूं कि मोहनी अपना हाल कुछ न कहने पाई और इनसे अलग हो गई ॥

एक० । तुम्हारा सोचना बहुत ठीक है ॥

मोहनी० । मुझे तो इनका नाम भी नहीं मालूम ॥

दूसरी० । कल तुम उनसे कहना कि तुमने भी तो अपना ठीक ठीक नाम वो हाल न बताया तब वे खुद ही कहेंगे कि मेरा नाम ठीक फलाना ही है और अपना हाल भी कहेंगे ॥

इतने में एक सखी ने शराब का गिलास भरके मोहनी के हाथ में दिया और कहा, "लो आज बड़ी खुशी का दिन है, रोज से दूनी पीनी चाहिये, पीयो और हमलोगों की तरफ भी खयाल रक्खो ईश्वर ने इनको यहां भेज दिया है तो ऐसा न हो कि इनके आने का सुख तुम ही लूटो ॥"

इसके जवाब में मोहनी ने हँसकर कहा, "क्या मैं तुम लोगों को रोकती हूं ? इसमें मेरा बस है या उनका ?"

थोड़ी देर तक हँसी खुशी की शैतानी दिल्लगी रही, इसके बाद लौंडियां खाने पीने का सामान भी उसी जगह ले आईं, सब मिल कर खाने और शराब पीने लगीं यहां तक कि नशे में मस्त हो उसी जगह सब की सब बेहोश जमीन पर लेट गईं किसी को तनोबदन की सुध न रही ॥

इस मोहनी की सखियों में दो सखी ऐसी थीं जो शराब को हाथ से भी नहीं छूती थीं और हर तरह से नेक और दयालु

थीं, दिन रात का ज्यादे हिस्सा ईश्वर के भजन और ध्यान ही में गँवाती थीं और यह शैतान की मण्डली उन्हें भली नहीं मालूम होती थी मगर क्या करें लाचार होकर साथ रहना पड़ा था, इनका नाम श्यामा और भामा था ॥

यह मोहनी तो अपनी सखियों के साथ शराब के नशे में ऐसी बेहोश पड़ी कि पहर दिन चढ़े तक तनोबदन की सुध न रही मगर बेचारी श्यामा और भामा कुछ रात रहते ही उठीं और जरूरी कामों से छुट्टी पा नहा धो साफ कपड़े पहिर कर नरेन्द्रसिंह के पास पहुंचीं और दिलोजान से उनकी खिदमत करने लगीं ॥

मोहनी की सूरत में फर्क क्यों पड़ गया! सूरत ही नहीं बल्कि चालचलन, निगाह, चितवन और बातचीत भी दूसरे ही ढङ्ग की नजर आती है, आंखों में उतनी हया भी नहीं है सिवाय इसके शहर छोड़ जङ्गल में रहना इसने क्यों पसन्द किया और अन्दाज से यह भी मालूम होता है कि मुझसे जुदा होकर इसने मेरी खोज बिल्कुल नहीं की। नरेन्द्रसिंह ने इसी सोच और खयाल में रात बिताई और घड़ी घड़ी उठकर देखते रहे कि सवेरा हुआ या नहीं ॥

अभी अच्छी तरह आस्मान पर सुपेदी नहीं फैली थी, एक तरह पर सवेरा हो चुका था, नरेन्द्रसिंह पलङ्ग पर लेटे लेटे दर्वाजे की तरफ देख रहे थे कि हाथों में जल का लोटा लिये

श्यामा और भामा पहुंचीं और उसी रास्ते से होकर दूसरे कमरे में चली गईं और लोटा रख कर फिर लौट गईं। थोड़ी देर में मुह धोने के लिये दतुअन, मञ्जन और धोती गमछा इत्यादि कुल सामान लेकर आईं और उसी कमरे में जिसमें जल का लोटा रख गई थीं इन चीजों को भी रक्खा, इसके बाद नरेन्द्रसिंह के पलङ्ग के पास पहुंचीं। इनको पास आते देख नरेन्द्रसिंह ने जान बूझ कर आंखें बन्द कर लीं और अपने को सोता हुआ बना लिया॥

श्यामा पैर दबाने और भामा पङ्खा झलने लगी। थोड़ी ही देर बाद नरेन्द्रसिंह उठ बैठे और उन्होंने पूछा, "सवेरा हो गया?"

श्यामा०। जी हां, उठिये मुह हाथ धोइये॥

नरेन्द्र०। (उठ कर) मोहनी कहां है?

श्यामा०। मोहनी कौन?

नरेन्द्र०। तुम्हारी मालिक॥

श्यामा०। जी हां, वह अभी तक सोती हैं॥

नरेन्द्र०। बहुत देर तक सोया करती हैं॥

श्यामा०। अब उनके उठने का भी समय हो गया तब तक आप चाहें तो स्नान सन्ध्या से छुट्टी पा सकते हैं॥

नरेन्द्र०। मैं भी यही चाहता हूं॥

इतना कह नरेन्द्रसिंह पलङ्ग के नीचे उतरे, श्यामा और भामा दोनों दिलोजान से काम करने पर मुस्तैद हो गईं। इनकी चालाकी और फुर्ती के साथ काम करने के सबब से नरेन्द्रसिंह जरूरी से

छुट्टी पाकर दतुअन, कुल्ला, स्नान, सन्ध्या इत्यादि से बहुत जल्द निश्चिन्त हो गये, किसी बात की जरा भी तकलीफ न हुई ॥

श्यामा और भामा जिस प्रेम के साथ उनकी खिदमत करती थीं उसे देख यह दङ्ग होगये और सोचने लगे कि ऐसी सलीके वाली लौंडियां आज तक मैंने नहीं देखीं, सिवाय इसके इन्हे लौंडी कहते भी शर्म मालूम होती है। चाहे इनकी पौशाक बेश-कीमत न हो फिर भी बातचीत और चाल ढाल से यह छोटे दर्जे की औरतें नहीं मालूम होतीं, इन दोनों का रङ्ग कुछ साँवला है तो क्या हुआ मगर इनके रूपवान होने में कोई शक नहीं, तिसमें यह एक जो अपना नाम श्यामा बताती है परम सुन्दरी है और लक्षण से मालूम होता है कि अभी कुंआरी है। अहा! क्या ही सुन्दर मुख और बड़ी बड़ी रसाकर आंखें हैं, अभी तक मैंने इनकी सुन्दरता पर ध्यान नहीं दिया था मगर अब जो गौर कर के देखता हूं तो यही कहने को जी चाहता है कि श्यामा खूबसूरती में किसी तरह भी मोहनी से कम नहीं है बल्कि गुण और शील में उससे बढ़ कर है। इसे तो सामने से जाने देने का जी ही नहीं चाहता, न मालूम क्यों इसकी तरफ मेरा चित्त खिचा जाता है, मोहनी आवे तो मैं पूछूं कि ये दोनों कौन हैं ॥

इतने ही में नींद से जाग, जमुहाई लेती हुई मोहनी भी आ पहुंची, इसका खुमार अभी तक उतरा न था, आते ही नरेन्द्र

सिंह के पास बैठ गई और गले में हाथ डाल बोली, "क्या अभी सोकर उठे हो ? स्नान न करोगे ?"

मोहनी के मुंह से शराबकी ऐसी बुरी भभक निकली कि नरेन्द्रसिंह का जी बिगड़ गया, मोहनी का हाथ अपने गले से निकाल झट उठ खड़े हुए और बोले—"मैं तुम्हारी इन दोनों चालाक लौंडियों की बदौलत स्नान पूजा से छुट्टी पा चुका हूं, तुम तो शायद अभी सोकर उठी हो॥"

मोहनी का हाथ अपने गले में से निकालकर यकायक इस तरह नरेन्द्रसिंह का उठ जाना उसे बहुत ही बुरा मालूम हुआ और लाल लाल आंखें कर नरेन्द्रसिंह की तरफ देखने लगी॥

नरेन्द्रसिंह भी तबीयत में सोचने लगे कि मोहनी को क्या होगया ! यह तो बातचीत से बहुत नेक और शरीफ खानदान की लड़की मालूम होती थी मगर अब इसका रङ्ग ढङ्ग बिल्कुल बदला हुआ देखता हूं, जब मैंने गुलाब का हाल इससे पूछा तो बोली कि "वह तो मर गई।" अभी मुझसे इसका सङ्ग छूटे पन्द्रह दिन भी नहीं हुए, क्या इसी बीच में गुलाब के मरने का गम इसके दिल से जाता रहा और हँसी खुशी में दिन बिताने लगी ? क्या किसी शरीफ खानदान की कुंआरी लड़की का ऐसा करना मुनासिब है ? यह तो बिल्कुल असभ्य और कुलटा मालूम होती है, अगर मोहनी की चाल चलन ऐसी ही है तो मैं इसकी मुहब्बत से बाज आया, मैं ऐसी बदचलन औरत से बात भी

करना पसन्द नहीं करता। वाह ! मेरे गले में हाथ डालते इसे जरा भी शर्म न मालूम हुई !!

थोड़ी देर तक दोनों अपने अपने मतलब को सोचते रहे, आखिर मोहनी से न रहा गया, बोली, "क्यों साहब आपने तो मेरी बड़ी बेइज्जती की !!"

नरेन्द्र०। वह क्या ?

मोहनी०। मैं आपकी मुहब्बत से आपके पास आकर बैठूं और आप इस तरह मुझे दुतकार कर उठ जायं ! क्या इसी को सभ्यता कहते हैं ?

नरेन्द्र०। अगर औरतें सौ दफे इस तरह के नखरे करें तो कोई हर्ज नहीं मगर मर्द एक ही दफे के नखरे में खराब समझा गया !!

बस नरेन्द्रसिंह के इतना ही कहने से मोहनी का खयाल बदल गया और वह हँसके बोली :—

"खैर अब आइये बैठिये ॥"

नरेन्द्र०। मेरा कायदा है कि नहाने के बाद मैं उस आदमी के पास नहीं बैठता जो बिना नहाया हो ॥

मोहनी०। क्या छूत लग जाती है ?

नरेन्द्र०। चाहे छूत न लगे तौ भी ऐसा कायदा रखने से बहुत कुछ फायदा है ॥

मोह०। (उठकर) खैर साहब मैं जाकर नहा आती हूं ॥

नरेन्द्र० । हां, इसके बाद फिर हमसे तुमसे बातचीत होगी ॥

मोहनी० । (श्यामा की तरफ देखकर) मैं नहाने जाती हूं तब तक तुम इनके खाने पीने का कुछ बन्दोबस्त करो ॥

श्यामा० । बहुत अच्छा ॥

मोहनी चली गई, उसके बाद श्यामा ने हाथ जोड़ कर नरेन्द्रसिंह से कहा, "मुझे मालिक का हुक्म हुआ है कि आपके वास्ते खाने पीने का बन्दोबस्त करूं मगर मेरा जी यहां से जाने को नहीं चाहता क्योंकि आप से एक बात कहनी बहुत जरूरी है, अगर मैं यहां से जा कर आप के भोजन का बन्दोबस्त करूं तो फिर बात करने का मौका न रहेगा क्योंकि तब तक मोहनी भी आ जायगी और मेरी बात ऐसी है कि सिवाय आपके अगर दूसरा सुन ले तो मेरी जान जाने में कोई शक न रहे ॥

नरेन्द्र० । वह कौन सी बात है कहो ॥

श्यामा० । मैं इस तरह नहीं कहने की, हां आप इस बात की कसम खायँ कि किसी दूसरे से न कहेंगे तो मैं जो कुछ गुप्त भेद है उसे कह डालूं ॥

गुप्त भेद का नाम सुनते ही नरेन्द्रसिंह चौंक पड़े । वह बात कौन सी है जिसके लिये श्यामा कसम खिलाया चाहती है, यह जानने के लिये जी बेचैन हो गया । कुछ गौर करने के बाद नरेन्द्रसिंह ने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और श्यामा से कहा, "देखो मैं क्षत्री हूं मेरे लिये इससे बढ़ के कोई कसम नहीं

है, इसे हाथ में ले कसम खाता हूं कि तुम्हारी बात कभी किसी से न कहूंगा ॥”

श्यामा०। अब मेरा जी भर गया, हां मैं आप से एक वादा और कराया चाहती हूं ॥

नरेन्द्र० । वह भी कहो ॥

श्यामा० । अगर मेरी बात सुन कर आप यहां से भागा चाहें तो हम दोनों को भी यहां से निकलने की फिक्र करें नहीं तो आपके जाने बाद हमलोग किसी तरह नहीं बच सकतीं ॥

नरेन्द्र० । (ताज्जुब से) ऐसी कौन बात है जिसे सुन मैं यहां से भाग जाऊंगा ?

श्यामा० । वह ऐसी ही बात है ॥

नरेन्द्र० खैर मैं इस बात की भी कसम खाता हूं कि अपने साथ तुम दोनों को भी यहां से बाहर करूंगा । हां, पहिले यह कहो कि मेरे लिये तुम अपने मालिक का साथ क्यों छोड़ोगी ?

श्यामा० । ईश्वर न करे ऐसी बदकार औरत की नौकरी मुझे करनी पड़े, न मालूम मैंने कौन ऐसे पाप किये हैं जिनके बदले कई दिन इसके पास रहने का दुःख परमेश्वर ने मुझे दिया, मैं इसकी लौंडी नहीं हूं मगर वक्त को क्या करूं ? यह सब आपकी......इतना कहते ही आंखों से टपाटप आंसू की बूंदें गिरने लगीं, कण्ठ भर आया और आवाज़ बन्द हो गई ॥

नरेन्द्र० । (हाथ थाम कर) हां हां, यह क्या, रोती क्यों हो ?

मैं वादा करता हूं कि जहां तक होगा तुम्हारा दुःख दूर करने से बाज न आऊंगा ॥

श्यामा० । आपके तो जरा ही निगाह करने से मेरा जन्म भर का दुःख दूर हो जायगा, नहीं मरी हुई तो हई हूं ॥

नरेन्द्र० । इसके लिये भी मैं वही कसम खाता हूं कि अगर मेरे किये तुम्हारा दुःख दूर हो जायगा तो मैं कभी मुंह न फेरूंगा ॥

श्यामा० । (आंसू पोंछ कर और अपने को खूब सम्हाल कर) अब ध्यान देकर सुनिये । पहिले तो यही कहना ठीक होगा कि यह मोहनी नहीं है जिसे आप मोहनी समझे हुए हैं ॥

नरेन्द्र० । (चौंक कर) हैं ! क्या यह मोहनी नहीं है ?

श्यामा० । नहीं ॥

नरेन्द्र० । हाय हाय ! इस नालायक ने तो पूरा धोखा दिया, पहिले ही मेरा जी इससे खटकता था, औरतें भी क्या ही आफत होती हैं ! ऐसों ही की शैतानी और बदकारी किताबों में देख देख कर और लोगों से सुन सुन कर मैंने दिल में निश्चय कर लिया था कि कभी शादी न करूंगा, इसी सबब से मैंने अपना देश छोड़ना मंजूर किया, फिर भी मोहनी की मुहब्बत में फँस कर मुझे दुःख ही उठाना पड़ा ॥

श्यामा० । नहीं, आपका ऐसा सोचना मुनासिब नहीं है, सब औरतें ऐसी ही बदकार और नालायक नहीं होतीं, एक के